5

महाजनपदों से नन्द तक राज्य निर्माण एवं नगरीकरण
(State Formation & Urbanisation from the Mahajanapadas to the Nandas)

प्राचीन भारतीय इतिहास में सर्वाधिक घटनाओं का आविर्भाव छठी शताब्दी से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. के मध्य हुआ, इस अवधि को भारतीय इतिहास में प्राक् मौर्य युग या बुद्ध युग के नाम से जाना जाता था.

प्राक् मौर्य युग में घटित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाएँ प्रमुख हैं—

(1) महाजनपदों का उदय.

(2) नये धर्मों का उदय.

(3) मगध साम्राज्यवाद का विकास.

(4) ईरानी एवं यूनानी आक्रमण.

महाजनपदों का उदय
(The Emergence of Mahajanapadas)

उत्तर-वैदिककालीन संस्कृति में 'जन' या 'जाति' आर्यों के राज्यों की मूलाधार होती थी. जाति या कुल के बसने के स्थान का नाम उसी जाति के नाम पर रखा जाता था, जो आगे चलकर प्रदेश या प्रान्त का नाम पड़ जाता था. इस तरह के राज्यों को 'जन' या '**जातीय राज्य**' कहा जाता था. उत्तर-वैदिक काल के बाद राजनैतिक परिस्थितियों के कारण जातियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर बस गईं, जिन्हें 'जनपद' कहा गया.

पालि भाषा में रचित बौद्ध-ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में निम्नलिखित सोलह महाजनपदों का उल्लेख किया गया है—

1. काशी	9. कुरु
2. कोशल	10. पांचाल
3. अंग	11. मत्स्य
4. मगध	12. शूरसेन
5. वज्जि	13. अश्मक
6. मल्ल	14. अवन्ति
7. चेदि	15. गांधार
8. वत्स	16. कम्बोज

- महावस्तु नामक ग्रन्थ में भी सोलह महाजनपदों का उल्लेख है, लेकिन उसके अनुसार अंगुत्तरनिकाय में वर्णित गांधार और कम्बोज के स्थान पर शिवि (पंजाब या राजपूताना) एवं **दशार्ण** (**मध्य भारत**) महाजनपद है.
- बौद्ध धर्मग्रन्थ भगवतीसूत्र के अनुसार 16 महाजनपद निम्नलिखित हैं—

1. अंग	9. लाढ़ (लाट या राधा)
2. बंग	10. पाढ (पाण्ड्य या पौण्ड्र)
3. मगह (मगध)	11. वज्जि
4. मलय	12. मोलि (मल्ल)
5. मालवा	13. काशी
6. अच्छ	14. कोशल
7. वत्छ (वत्स)	15. अवाह
8. कोच्छ (कच्छ)	16. संभुत्तरा (संहोत्रा)

- अंग, मगध, वत्स, वज्जि, काशी और कोशल. ऐसे 6 महाजनपद हैं, जोकि अंगुत्तरनिकाय एवं भगवतीसूत्र में समान हैं. मोलि को मल्ल एवं मालव को अवन्ती माना गया है. इसके अतिरिक्त अन्य महाजनपद नये हैं, जो सुदूर पूर्व और दक्षिण में स्थित हो सकते हैं.
- छठी शताब्दी ई. पू. की राजनीतिक स्थिति को प्रामाणिक स्वरूप में प्रदर्शित करने का एकमात्र उत्कृष्ट साक्ष्य अंगुत्तरनिकाय है.
- अंगुत्तरनिकाय, महावस्तु, भगवतीसूत्र के अतिरिक्त निम्नलिखित धर्मग्रन्थों में भी सोलह महाजनपदों का स्पष्ट वर्णन मिलता है—

वैदिक साहित्य

1. ऋग्वेद	7. श्रौतसूत्र
2. अथर्ववेद	8. प्रश्नोपनिषद्
3. शतपथब्राह्मणम्	9. बौधायन श्रौतसूत्र
4. गोपथब्राह्मणम्	10. शांखायन
5. ऐतरेय ब्राह्मण	11. वाजसनेय संहिता
6. ब्राह्मण	

बौद्ध साहित्य

1. जातक साहित्य	6. दीपवंश
2. विनयपिटक	7. महावंश
3. महावग्ग	8. ललितविस्तर
4. महापरिनिर्वाण सूत्त	9. बुद्धचरितम्
5. त्रिपिटक	10. अवदान साहित्य

जैन साहित्य

1. आचारांग सूत्त	3. धूर्ताख्यान
2. पद्मचरित	4. नंदीसूत्र

- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी जनपद उत्तरी भारत में अवस्थित थे.
- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में अवस्थित थे एवं उत्तरी-पश्चिमी सीमा से विहार तक फैले हुए थे.

महाजनपदों का विकास : कारण एवं प्रक्रिया

- महाजनपदों का उदय एवं विकास छठी शताब्दी ई. पू. में हुआ.
- महाजनपदों के आविर्भाव एवं विकास की पृष्ठभूमि तैयार करने में सर्वाधिक मौलिक कारण उत्तर-वैदिककालीन आर्थिक परिवर्तन था.
- जातिगत प्रवृत्ति के कम पड़ने से क्षेत्रीय तत्त्वों का विकास हुआ, जिसके फलस्वरूप जातीय राज्यों के स्थान पर क्षेत्रीय राज्यों का आविर्भाव एवं विकास हुआ.
- क्षेत्रीय राज्यों के आविर्भाव से वैदिक जन का स्वरूप परिवर्तित हुआ एवं जनपदों या महाजनपदों के विकास का रास्ता खुला.
- पांचाल महाजनपद का निर्माण पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने पर हुआ.
- चेदि, कोशल, काशी, मत्स्य आदि ऐसे जनपद थे, जो बिना बाहरी सहयोग के ही महाजनपदों के स्वरूप को ग्रहण करने में सफल हो सके.

सोलह महाजनपद
(The Sixteen Mahajanapadas)

- पालिभाषा में रचित बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में वर्णित महाजनपदों में वज्जि एवं मल्ल महाजनपद गणतन्त्रात्मक थे.
- अंगुत्तरनिकाय में वर्णित शेष महाजनपद अंग, मगध, काशी, कोशल, वत्स, चेदि, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अवन्ति, गान्धार, कम्बोज एवं अश्मक राजतन्त्रात्मक प्रणाली के महाजनपद थे.
- अंगुत्तरनिकाय में काशी, कोशल और अंग के मध्य में विद्यमान साम्राज्य की भावना के विकास एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का स्पष्ट रूप से उल्लेख मिलता है.

1. अंग महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	बिहार के उत्तरी पूर्वी भाग में अवस्थित (वर्तमान बिहार के भागलपुर एवं मुंगेर जिलों में)
2. राजधानी	चम्पा नगरी (भागलपुर के निकट गंगा और मालिनी के संगम पर)
3. उल्लेख	जातक कथाओं एवं अंगुत्तर निकाय में
4. व्यापारिक स्थिति	अंग की राजधानी चम्पा नगरी छठी शताब्दी में श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र थी
5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	पूर्व का सबसे प्रमुख एवं शक्तिशाली महाजनपद
6. उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य	चम्पा नगरी में छठी शताब्दी ई. पू. के जनजीवन के प्रमाण
7. पड़ोसी महाजनपद	अंग महाजनपद की सीमा मगध से लगी हुई थी
8. संघर्ष	सम्प्रभुता के लिए मगध और अंग में
9. विजय	मगध की राजधानी राजगीर पर अंग का अधिकार हो गया
10. पराजय	मगध के शासक बिम्बिसार द्वारा अंग के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या एवं अंग का मगध में विलय हो गया.

2. मगध महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	गंगा के दक्षिणी भाग में अवस्थित (दक्षिणी बिहार में) (वर्तमान पटना एवं शाहाबाद)
2. प्राचीन राजधानी	गिरिव्रज (राजगृह या राजगीर)
3. उल्लेख	अंगुत्तरनिकाय में विस्तृत वर्णन (प्रजा, राजा एवं राजगृह के बारे में)
4. नयी राजधानी	पाटलिपुत्र (कुसुमपुर, पुष्पपुर, पटना, पाटलिग्राम)

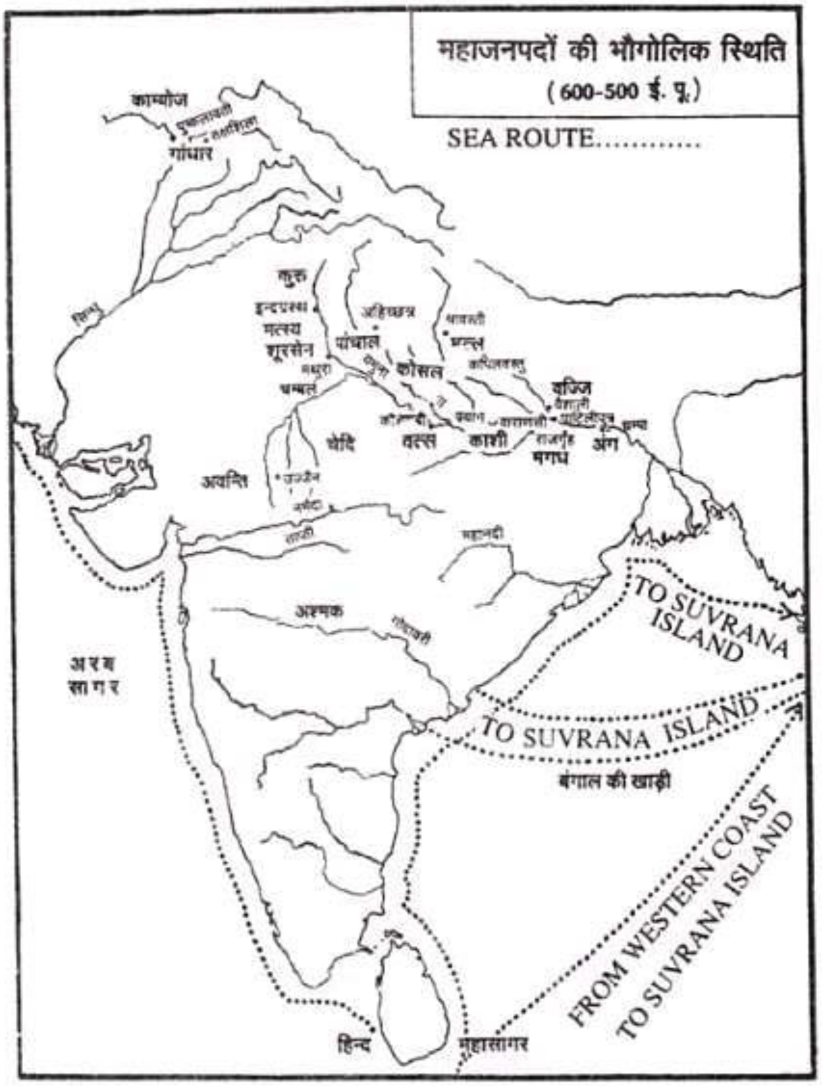

5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	छठी शताब्दी ई. पू. के महाजनपदों में सर्वाधिक शक्तिशाली एवं उत्तरी भारत की राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केन्द्र.
6. मगध के विकास में उत्तरदायी शासक एवं वंश	बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, हर्यक एवं नन्द वंश
7. विजय	चतुर्थ शताब्दी में आसपास के महाजनपदों पर अधिसत्ता स्थापित की
8. पूर्व शासक	बार्हद्रथ वंश के वृहद्रथ एवं जरासन्ध
9. विशेषताएँ	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र (राजगृह)

3. काशी महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	वरुणा और अस्सी नदियों के संगम पर अवस्थित (वर्तमान उत्तर प्रदेश के दक्षिण-पूर्व में)
2. राजधानी	वाराणसी या बनारस (राजा बानर के नाम पर नामकरण)
3. प्राचीन स्वरूप	वाराणसी छठी ई. पू. मिट्टी की दीवारों से घिरी एक नगरी थी

4. उत्खनन से प्राप्त साक्ष्य	राजघाट की खुदाई से सातवीं शताब्दी ई. पू. से जनजीवन स्थापित होने के साक्ष्य
5. महाजनपदों में तुलनात्मक स्थिति	ज्ञान, शिष्य, व्यापार और समृद्धि के लिए सभी महाजनपदों में श्रेष्ठ
6. उल्लेख	गुत्तिलजातक में
7. विस्तार	बारह योजन तक
8. संघर्ष	सम्प्रभुता के लिए काशी और कौशल में
9. शासक	1. ब्रह्मदत्त (इसके शासनकाल में काशी 'अग्रराज' से प्रसिद्ध थी) 2. जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के पिता अश्वसेन (नागवंश)
10. पराजय	अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर इसे मगध में सम्मिलित कर लिया

4. कोशल महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में
2. सीमाएँ	पूर्व में गण्डक नदी तक, पश्चिम में पांचाल (मध्य दोआब)
3. विभाजित प्रदेश	सरयू नदी के कारण दो विभाग— 1. उत्तरी कोशल 2. दक्षिणी कोशल
4. उत्तरी कोशल की राजधानी (आरम्भिक)	श्रावस्ती (वर्तमान सहेतमहेत, उत्तर प्रदेश)
5. उत्तरी कोशल की राजधानी (नयी)	साकेत (अयोध्या)
6. दक्षिणी कोशल की राजधानी	कुशावती
7. संघर्ष	कोशल और काशी के मध्य राजनीतिक एवं व्यावसायिक संघर्ष
8. शासक	प्रसेनजित (बुद्ध के काल में)
9. विजय	काशी पर आक्रमण कर कोशल में काशी को मिला लिया
10. पराजय	अजातशत्रु ने आक्रमण कर कोशल को मगध में मिला लिया
11. उल्लेख	पालि ग्रंथ एवं रामायण में

5. वज्जि महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	मगध के उत्तरी भाग में
2. प्रशासनिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपद
3. महाजनपदों में लोकतान्त्रिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपदों में सर्वोत्कृष्ट स्थिति
4. गणतन्त्रों की संख्या	आठ
5. आठ गणराज्यों में प्रमुख	(1) विदेह, (2) लिच्छवि, (3) ज्ञातृंक
6. उद्भव प्रक्रिया	प्राचीन विदेह एवं वैशाली के टूटने से वज्जि महाजनपद राजतन्त्र से गणतन्त्र बना.
7. लिच्छवी गणराज्य की राजधानी	वैशाली (वर्तमान में मुजफ्फरपुर का वसाढ़ नामक स्थान)
8. उल्लेखनीय स्थिति	बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र, गौतम बुद्ध ने प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली को यहीं उपदेश दिया था.
9. उत्खनन के साक्ष्य	वैशाली में छठी शताब्दी ई. पू. के जनजीवन होने के प्रमाण
10. साहित्य में उल्लेख	पालि एवं प्राकृत साहित्य में प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन
11. पराजय	मगध के सम्राट् अजातशत्रु ने वज्जि को मगध साम्राज्य में मिला लिया था.

6. मल्ल महाजनपद

1. प्रशासनिक स्थिति	गणतान्त्रिक महाजनपद
2. भौगोलिक स्थिति	वज्जि महाजनपद के पश्चिमोत्तर एवं कोशल महाजनपद के पूर्व में हिमालय की तराई में अवस्थित प्राचीन कोशल का पूर्वी भाग
3. विभाग	मल्ल महाजनपद के दो विभाग थे
4. राजधानी	1. कुशीनारा (वर्तमान में देवरिया, उ.प्र. का कुसिया ग्राम) 2. पावा (गोरखपुर का पावा नामक स्थल)
5. उल्लेखनीय स्थिति	बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में मल्ल महाजनपद की राजधानी कुशीनारा थी

6. गणतन्त्रों की संख्या	नौ (9)
7. संघर्ष	वज्जि एवं मल्ल के मध्य राजनैतिक संघर्ष
8. पराजय	मल्ल का विलय मगध में हो गया था.

7. वत्स महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	काशी महाजनपद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित
2. राजधानी	यमुना नदी के किनारे स्थित कौशाम्बी (वर्तमान इलाहाबाद)
3. स्थापना सम्बन्धी अवधारणा	1. पौराणिक कथाओं के अनुसार 'हस्तिनापुर' के नष्ट हो जाने पर पौरव राजा निचक्षु ने यमुना किनारे बसाया 2. महाभारत के अनुसार चेदियों द्वारा स्थापित
4. शासक	बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध राजा उदयन
5. उल्लेखनीय स्थिति	नाटककार भास की नाट्य रचना. 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उदयन' इसी महाजनपद का शासक था
6. संघर्ष	राजनीतिक प्रभुत्व के लिए अवन्ति से संघर्ष

8. चेदि महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	वत्स के दक्षिण भाग में यमुना नदी के किनारे पर अवस्थित
2. राजधानी	शुक्तिमती या सोत्थिमती (पालिग्रन्थों के अनुसार)
3. सीमा	कुरु महाजनपद (आधुनिक बुन्देल-खण्ड) से मिली हुई थी
4. उल्लेखनीय स्थिति	1. कलिंग के चेदि इस जनपद से सम्बद्ध थे 2. मत्स्य, कुरु एवं काशी के साथ राजनीतिक सम्बन्ध थे 3. वैदिक विधानों को मानने वाला महाजनपद (महाभारत के अनुसार) था.
5. शासक	प्रतापी शासक शिशुपाल (महाभारत के अनुसार) था.

9. कुरु महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	यमुना नदी के किनारे पर इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के आसपास अवस्थित
2. राजधानी	इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान–पुराना किला दिल्ली)
3. तुलनात्मक स्थिति	कुरुओं का अत्यन्त प्रसिद्ध राजवंश
4. शासक	धनंजय राजा कौरव (बौद्ध काल में), इक्ष्वाकु, सुतसोम
5. उल्लेखनीय स्थिति	1. हस्तिनापुर के नष्ट हो जाने पर कुरुओं का एक हिस्सा कौशाम्बी में चला गया 2. जातक ग्रन्थों के अनुसार श्रेष्ठ एवं धर्माचारी महाजनपद 3. राजतन्त्रात्मक से गणतन्त्रात्मक शासन में परिवर्तन 4. कुरु महाजनपद में तीन सौ संघ थे (जातक कथाओं के अनुसार)
6. साहित्यिक स्रोत	जातक, महाभारत एवं अन्य बौद्ध ग्रन्थ

10. पांचाल महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	रुहेलखण्ड और पश्चिमी उत्तर प्रदेश मध्य दोआब क्षेत्र में अवस्थित
2. विभाग	1. उत्तरी पांचाल 2. दक्षिणी पांचाल. (दिव्यावदान एवं जातक के अनुसार)
3. विभाजन रेखा	गंगा नदी द्वारा निर्मित
4. राजधानी (उत्तरी पांचाल)	1. अहिच्छत्र (वर्तमान बरेली)
5. राजधानी (दक्षिणी पांचाल)	2. कांपिल्य (वर्तमान फर्रुखाबाद)
6. सीमाएँ	हिमालय की तराई से दक्षिण में चम्बल नदी, पूर्व में कोशल महाजनपद तथा पश्चिम में कुरु महाजनपद
7. उल्लेखनीय स्थिति	1. महाभारत के कर्ण पर्व के अनुसार कुरु एवं पांचाल वाले आधे शब्दों से ही पूरा अर्थ निकाल लेते थे 2. द्रोपदी पांचाल नरेश द्रुपद की कन्या थी, अतः पांचाली कहलाती थी 3. महाभारत के अनुसार श्रेष्ठ महाजनपद
8. साहित्यिक स्रोत	दिव्यावदान, जातक कथाएँ, महाभारत

11. मत्स्य महाजनपद

1. भौगोलिक सीमाएँ	चम्बल नदी से सरस्वती नदी तक प्रसार

2. महाजनपद की शाखाएँ वीरमत्स्य, अपरमत्स्य

3. आधुनिक स्थल भरतपुर, जयपुर, अलवर

4. राजधानी विराट नगर (वर्तमान बैराठ)

5. शासक विराट (इसी के नाम पर राजधानी का नामकरण हुआ)

6. पराजय शहाज नामक शासक द्वारा मगध एवं मत्स्य पर एक साथ शासन किया.

7. साहित्यिक स्रोत महाभारत

12. शूरसेन महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति चेदि महाजनपद के पश्चिमोत्तर में एवं कुरु के दक्षिण में अवस्थित (वर्तमान बृजमण्डल)

2. राजधानी मथुरा

3. शासक अवन्तिपुत्र (बुद्ध समकालीन)

4. उल्लेखनीय स्थिति
1. इस महाजनपद में सबसे पहले यदुवंशी अंधक वृष्णियों का गणराज्य था.
2. महाभारत और पुराणों के अनुसार मथुरा प्रसिद्ध व्यापारिक एवं धार्मिक स्थल था.
3. पौराणिक कथाओं के अनुसार यहाँ पर वितिहोत्र एवं सत्वत यादवों का राज्य था.
4. महिष्मति एवं विदर्भ जैसे राज्यों को यादव राजाओं ने स्थापित किया था.
5. वृष्णि यादवों के संघ के प्रमुख श्रीकृष्ण थे.
6. पाणिनी एवं पालि साहित्य के अनुसार पहले यहाँ गणतन्त्रात्मक शासन-प्रणाली थी, जो कालान्तर में राजतन्त्रात्मक हो गई थी.
7. शूरसेन एवं अवन्ति में पारस्परिक वैवाहिक सम्बन्ध था.
8. तत्कालीन पौराणिक ग्रन्थों के अनुसार मथुरा की प्रशासनिक व्यवस्था अत्यन्त सुदृढ़ एवं उत्कृष्ट थी.

13. अवन्ति महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति पश्चिमी भारत में मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवस्थित था

2. विभाग
1. उत्तरी अवन्ति
2. दक्षिणी अवन्ति

3. राजधानी
1. उज्जयिनी या उज्जैन (उत्तरी अवन्ति)
2. महिष्मति (दक्षिणी अवन्ति) वर्तमान मान्धाता

4. शासक चण्डप्रद्योत (बुद्ध समकालीन)

5. विजय वत्स, कोशल एवं मगध पर

6. उल्लेखनीय स्थिति
1. बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र
2. उत्तर से दक्षिण की तरफ व्यापारिक मार्ग उज्जैन से निकलता था

7. पराजय मगध सम्राट् शिशुनाग ने अवन्ति पर आक्रमण कर लिया था.

14. गांधार महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित
[वर्तमान में पेशावर, रावलपिण्डी (पाकिस्तान) के क्षेत्र]

2. तुलनात्मक स्थिति अत्यन्त शक्तिशाली राज्य

3. राजधानी तक्षशिला

4. शासक प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन

5. संघर्ष सम्प्रभुता के लिए अवन्ति के साथ संघर्ष

6. उल्लेखनीय स्थिति
1. यहाँ की राजधानी शिक्षा एवं व्यापार का मुख्य केन्द्र थी.
2. यहाँ का शासक प्रसिद्ध एवं मगध सम्राट् बिम्बिसार का मित्र था.

7. पराजय छठी शताब्दी ई. पू. के उत्तरार्द्ध में गांधार पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया था.

15. कम्बोज महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र का दूसरा भाग

2. राजधानी हाटक या राजपुर

3. शासक चन्द्रवर्मन, सुदक्षिण (साहित्यिक स्रोतों के अनुसार)

4. उल्लेखनीय स्थिति
1. प्रारम्भ में राजतन्त्रीय व्यवस्था थी, जो गणतन्त्रीय शासन-प्रणाली में परिवर्तित हो गई थी.
2. गांधार महाजनपद का पड़ोसी जनपद

16. अश्मक महाजनपद

1. भौगोलिक स्थिति	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित
2. राजधानी	पोतन या पोतना या पोटली
3. शासक	इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रिय
4. संघर्ष	अवन्ति के साथ सम्प्रभुता के लिए संघर्ष
5. उल्लेखनीय स्थिति	1. यह महाजनपद उत्तरी भारत में स्थित नहीं था 2. यूनानी इतिहासकारों के अनुसार वर्तमान में सिन्धु नदी के किनारे पर एस्सेकेनाय राज्य अश्मक महाजनपद ही था
6. पराजय	अवन्ति ने इस पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया

महाजनपदों की राजतन्त्रीय व्यवस्था

(The Monarchical set-up of the Mahajanapadas)

- छठी शताब्दी ई. पू. में लगभग सभी महाजनपदों में प्रशासनिक व्यवस्था राजतन्त्रीय थी, लेकिन उन सभी में असमानता दृष्टिगोचर होती थी.
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्नलिखित पाँच प्रकार के राज्य होते थे—

1. साम्राज्य
2. भोज्य
3. स्वराज्य
4. वैराज्य
5. राज्य

विभिन्न महाजनपदों में शासक एवं राज्य की स्थिति इस प्रकार की होती थी—

राजतंत्रीय व्यवस्था में (राजा)

(1) छठी शताब्दी ई. पू. राजतन्त्रीय व्यवस्था में शासन का प्रधान राजा होता था, जिसका पद वंशानुगत होता था. निर्वाचित राजतन्त्रीय प्रणाली समाप्त हो गई थी.

(2) राजा प्रजापालक, सामाजिक व्यवस्था को लागू करने वाला, कर उगाहने वाला तथा युद्ध में विजय दिलाने वाला होता था.

(3) राज्य की आमदनी निश्चित हो चुकी थी, अतः राज्य और प्रजा की सुरक्षा के लिए सेना रखने का क्रम प्रारम्भ हो गया था.

(4) उत्तर-वैदिक साहित्य के अनुसार राजा या राज्य की उत्पत्ति देवताओं के प्रयास से हुई. अतः उसमें देवत्व का अंश माना जाता था.

(5) दीघनिकाय, महावस्तु के अनुसार राज्य का जन्म एक समझौते के अनुसार हुआ था.

राजतन्त्रीय व्यवस्था में 'परिषद्'

(1) छठी शताब्दी ई. पू. से राजा को सलाह देने एवं सहायता करने के लिए 'परिषद्' (मंत्रिपरिषद्) संगठित हो गई थी.

(2) प्राक्-मौर्य युग में राजतन्त्रीय व्यवस्था का प्रमुख अंग 'परिषद्' थी.

(3) प्रधान पुरोहित, (ब्राह्मण) राजा के सलाहकार होते थे, वे परिषद् में चुने जाते थे.

राजतन्त्रीय व्यवस्था में 'नौकरशाही'

(1) इस काल में राजा अपनी सहायता के लिए पदाधिकारियों की नियुक्ति करता था. प्रमुख अधिकारियों का वर्ग 'महामात्र' के नाम से जाना जाता था. कुछ राज्यों में इन्हें 'आयुक्त' कहा जाता था.

क्र.	नाम क्षेत्र / वंश	शासक	राज्य	प्रणाली / प्रक्रिया
1.	(1) मगध, (2) कलिंग, (3) बंग	सम्राट् कहलाता था	साम्राज्य कहलाता था.	1. इनका अभिषेक साम्राज्य के लिए होता था. 2. सदैव अपने राज्य विस्तार के लिए प्रयासरत् रहते थे.
2.	दक्षिण के सात्वतों (यादवों) का राज्य	भोज कहलाता था	'भोज्य' कहलाता था.	1. नियुक्ति निश्चित अवधि के लिए होती थी. 2. शासकों का पद वंशानुगत नहीं होता था.
3.	स्वराष्ट्र, कच्छ, सौवीर	स्वराट् कहलाता था	स्वराज्य कहलाता था.	1. राजा की स्थिति 'समानों में ज्येष्ठ' जैसी थी. 2. व्यवस्था कुलीनतन्त्रीय थी. 3. सभी कुलीन बारी-बारी से शासन में भाग लेते थे.
4.	उत्तरी क्षेत्र (हिमालय)	विराट कहलाता था	वैराज्य कहलाता था.	1. राजा निश्चित नहीं होते थे. 2. प्रजा के प्रतिनिधि शासन सँभालते थे.
5.	मध्य प्रदेश	राजा कहलाता था	राज्य कहलाता था.	
6.	कुरु, पांचाल, काशी, कोशल			यहाँ पर परम्परागत राजतन्त्रात्मक व्यवस्था प्रचलित थी.

(2) अधिकारियों का पद वंशानुगत नहीं होता था.

(3) सेनानायक, मंत्री, प्रधान न्यायाधीश, कोषाध्यक्ष इत्यादि पद अधिकारियों के लिए सृजित किये जाते थे.

(4) राजा द्वारा अधिकारियों को नकद वेतन प्रदान किया जाता था.

(5) इनका पद, कार्य एवं अन्य गतिविधियाँ राजा की इच्छा पर आधारित होती थीं.

राजतन्त्रीय 'ग्रामीण प्रशासन व्यवस्था'

(1) गाँव में प्रशासन व्यवस्था को चलाने के लिए छठी शताब्दी ई. पू. ग्राम प्रशासन का प्रधान ग्रामणी, ग्रामिक या ग्राम भोजक होता था.

(2) शान्ति व्यवस्था स्थापित करने से लेकर कर उगाहने की व्यवस्था ग्रामणी के द्वारा ही सम्पन्न होती थी.

(3) ग्रामणी का मनोनयन ग्रामवासियों द्वारा ही होता था.

राजतन्त्रीय 'न्याय' एवं 'राजस्व व्यवस्था'

(अ) राजस्व व्यवस्था

(1) राजतन्त्रीय व्यवस्था में विभिन्न स्रोतों से राजस्व इकट्ठा किया जाता था.

(2) भूमि कर $\left(\text{उपज का } \frac{1}{6} \text{ भाग}\right)$ एवं विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चुँगी राज्य की आमदनी का स्रोत था.

(3) उपहार और भेंट (बलि) प्राप्त होती थी जिसे इकट्ठा करने वाला अधिकारी '**बलिसाधक**' होता था.

(4) कर वैश्य वर्ग से लिया जाता था. ब्राह्मण, क्षत्रिय कर मुक्त थे.

(5) कर एकत्र करने एवं खजाने की देखभाल करने के लिए 'भाण्डागारिक' (शौल्किक) एवं 'भागदुध' नामक अधिकारी होते थे.

(ब) न्याय व्यवस्था

(1) कानून व्यवस्था वर्ण व्यवस्था पर आधारित थी.

(2) निम्न वर्ग को अधिक सजा का एवं उच्च वर्ग को कम सजा का प्रावधान था.

(3) राजा न्याय का प्रधान होता था.

(4) जातीयता, परिवार एवं क्षेत्रीयता को न्याय में विशेष महत्वपूर्ण माना जाता था.

गणतन्त्रीय व्यवस्था
(The Republican Tradition)

- छठी शताब्दी ई. पू. राजतन्त्रीय व्यवस्था के अलावा गणतन्त्रीय व्यवस्था वाले महाजनपद भी अस्तित्व में थे.
- पालि साहित्य में 10 गणतन्त्रों की प्रशासनिक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है. ये गणतन्त्र सिन्धु नदी की द्रोणी एवं हिमालय की तलहटी में अवस्थित थे, जिनमें कालान्तर में राजतन्त्र से गणतन्त्र की स्थापना हो चुकी थी.
- पालि साहित्य में वर्णित प्रमुख गणराज्य निम्नलिखित थे—

1. कपिलवस्तु के शाक्य	6. सुसुमार के भग्ग
2. कुशीनारा के मल्ल	7. अल्लकप्प के बुलि
3. मिथिला के विदेह	8. वैशाली के लिच्छवि
4. पिप्पलीवन के मोरिय	9. केसपुत्त के कालाम
5. रामग्राम के कोलिय	10. पावा के मल्ल

- कपिल वस्तु जो वर्तमान में पिपरहवा, बस्ती जिला, उत्तर प्रदेश है, शाक्यों की राजधानी थी. गौतम बुद्ध के पिता शुद्धोदन शाक्यों के गण के प्रमुख थे. इसी में शाक्यों की प्रसिद्ध नगरी लुम्बिनी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था. यहाँ पर इक्ष्वाकुवंशीय क्षत्रियों का शासन था. कालान्तर में यह कोशल राजतन्त्र में विलय हो गया.
- शाक्यों के पूर्व में कोलियों का राज्य था. शाक्य और कोलियों के मध्य रोहिणी नदी प्रवाहित होती थी जो विभाजक रेखा का काम करती थी. इन दोनों में जल बँटवारे के कारण संघर्ष होता रहता था.
- कोशल के पूर्व में एवं वज्जि के पश्चिम में मल्ल अवस्थित थे. कुशीनारा और पावा इनकी दो शाखाएँ थीं. पावा महावीर स्वामी का निर्वाण स्थल एवं कुशीनारा गौतम बुद्ध के निर्वाण स्थल के रूप में प्रसिद्ध रहा है.
- मिथिला की संस्कृति सारे देश भर में प्रसिद्ध थी, यह विदेहों की राजधानी थी.
- केसपुत्त का कालाम एक छोटा गणराज्य था, केसपुत्त कालाम का प्रसिद्ध नगर था, जो गोमती नदी के तट पर अवस्थित था. आलार कालाम बुद्ध के प्रारम्भिक गुरु इसी कालाम गणराज्य के रहने वाले थे.
- सुसुमार, मिर्जापुर (उ.प्र.), पिप्पलीवन नेपाल की तराई में, अल्लकप्प राज्य का भाग बुलि मुज्जफ्फरपुर और शाहवाद के समीप अवस्थित था.

गणराज्यीय 'प्रशासनिक व्यवस्था'

(1) गणराज्यीय प्रशासन में राजा निर्वाचित होता था, राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था, जो कुलीनों के नियन्त्रण एवं सहयोग से कार्य करता था.

(2) गणराज्यीय प्रशासन में गण के प्रमुख व्यक्ति राजा की उपाधि धारण कर सकते थे. उन्हें राजस्व इकट्ठा करने, सेना रखने एवं प्रशासन पर पूर्ण नियन्त्रण का अधिकार था.

(3) गणराज्यीय प्रशासन में ब्राह्मणों को विशेषाधिकार प्राप्त नहीं होता था, वे राजा के सलाहकार या गण के प्रमुख नहीं होते थे.

(4) गणराज्य की वास्तविक शक्ति व्यवस्थापिका या उसकी केन्द्रीय सभा में निहित होती थी, जिसकी सदस्य संख्या अनिश्चित होती थी.

(5) प्राचीन भारतीय गणतन्त्र कुलीनतन्त्र होता था, जहाँ पर कुलीन वर्ग ही प्रशासन की गतिविधियों को संचालित करता था.

मगध-साम्राज्यवाद का उदय (The Rise of the Magadh Imperialism)

- मगध साम्राज्यवाद का उदय छठी शताब्दी ई. पू. की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी.
- 16 महाजनपदों में से मगध राजनीतिक सर्वोच्चता प्राप्त कर साम्राज्यवाद के अस्तित्व को अंगीकृत कर चुका था. जिसकी नींव पर कालान्तर में चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी.

उदय के कारण

अन्य सभी महाजनपदों को अपने में विलीन कर मगध एक शक्तिशाली एवं समृद्ध साम्राज्य बन गया. मगध साम्राज्यवाद के उदय में मूलतः उसकी भौगोलिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियाँ थीं. मगध साम्राज्य के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. मगध उत्तरी भारत के विशाल तटवर्ती मैदानों के ऊपरी एवं निचले भाग के मध्य सुरक्षित भौगोलिक परिस्थितियों के मध्य अवस्थित था; जिस पर आक्रमणकारी गतिविधियाँ सँभावित नहीं थीं. यहाँ के शासक बाहरी आक्रमण एवं राजधानी की सुरक्षा की चिन्ता से मुक्त थे.

2. मगध के पास अन्य महाजनपदों की अपेक्षा में गज सेना एवं आधुनिक हथियारों से युक्त प्रबल सेना थी, जिसकी दम पर अनवरत् मगध दूसरे जनपदों को अपने में सम्मिलित करता गया.

3. मगध की आर्थिक परिस्थितियों के कारक व्यापार, कृषि, उद्योग अत्यधिक सम्पन्न थे जिसके फलस्वरूप मगध साम्राज्यवाद की दिशा में अग्रसर होने में सफल हो सका.

4. मगध में श्रेष्ठ शासकों की कमी नहीं थी. बिम्बिसार, अजातशत्रु, शिशुनाग, महापद्मानंद आदि ऐसे शासक मगध में पैदा हुए जो बेहद कुशल एवं प्रतापी थे, जिन्होंने मगध साम्राज्यवाद के उदय में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया.

मगध का प्राचीन इतिहास (Ancient History of Magadh)

- मगध का सबसे पहले उल्लेख 'अथर्ववेद' में प्राप्त होता है. ऋग्वेद में 'कीकट' (किराट या किरात) नामक जाति एवं प्रमगंद नामक शासक का उल्लेख मिलता है जिसकी पहचान मगध से कई गई है.
- अथर्वसंहिता के जात्यभाग से व्रात्य को पुंश्चली या वैश्या कहा गया है और उसे मगध से सम्बद्ध किया है. वेदों में मगध के ब्राह्मणों (ब्रह्मबन्धुओं) को निम्न श्रेणी का माना जाता था.

बृहद्रथ वंश

महाभारत एवं पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक 'बृहद्रथ' था. बृहद्रथ का पिता वसु चैद्य-उपरिचर था, जिसने मगध की प्रारम्भिक राजधानी वसुमती या गिरिव्रज की स्थापना की थी.

बृहद्रथ का पुत्र अत्यन्त प्रतापी एवं कुशल शासक जरासंध था, जिसने अपने साम्राज्य का प्रसार किया. जरासंध ने कृष्ण के निर्देशानुसार भीम से पराजित होकर मृत्यु का वरण किया था. मगध का अन्तिम शासक रिपुंजय था, जो अयोग्य एवं निर्बल था. उसकी मृत्यु उसके मंत्री के द्वारा करवाने के बाद मगध में दूसरे वंश का आविर्भाव हुआ.

शिशुनाग या हर्यक वंश

बृहद्रथ वंश के बाद मगध में शिशुनाग वंश या हर्यक वंश का उदय हुआ. पुराणों में इसे शिशुनाग वंश एवं जैन, बौद्ध ग्रन्थों में हर्यक वंश कहा गया है. शिशुनाग या सुसुनाग ने इस वंश की स्थापना की. मगध साम्राज्य की नींव रखने वाला शासक बिम्बिसार हर्यक वंश का प्रथम महान् शासक था. इस वंश के राजाओं का वर्णन आगे किया गया है—

बिम्बिसार (544-492 ई. पू.)

1.	**वास्तविक नाम**	बिम्बिसार
2.	**पिता**	1. दक्षिण बिहार के एक छोटे सैनिक अधिकारी. 2. भट्टिय या भाटियों का पुत्र (महावंश के अनुसार).
3.	**कुल**	हर्यक कुल (अश्वघोष के बुद्धचरित के अनुसार)
4.	**उपनाम**	सेणिय, श्रेणिक
5.	**राज्याभिषेक**	14 वर्ष की अल्पायु में 544 ई. पू.
6.	**राज्याभिषेक के समय मगध की स्थिति**	1. मगध की स्थिति उस समय अत्यधिक खराब थी.

		2. पड़ोसी राज्य विस्तार में लगे थे. 3. तक्षशिला और अवन्ति के सम्बन्ध कटु थे.
7.	तुलनात्मक राजवंश	यूरोप के हैप्सवर्ग एवं वौरवन्स राजवर्ग
8.	उल्लेखनीय कार्य	1. अवन्ति के राजा चंड प्रद्योत एवं गांधार के राजा पौष्करसारिन में समझौता कराकर मैत्री स्थापित की. 2. राजा चंड प्रद्योत (अवन्ति नरेश) पीलिया से पीड़ित था जिसका इलाज विम्बिसार के प्रसिद्ध वैद्य 'जीवक' ने किया यह कार्य उसने सम्बन्ध सुधारने के लिए किया था. 3. मद्र (पूर्वी पंजाव), कोशल एवं वैशाली के लिच्छवियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये. 4. कूटनीति, वैवाहिक सम्बन्ध एवं सैन्य शक्ति के द्वारा वर्चस्व स्थापित किया. 5. अंग को जीतकर उसके राजा ब्रह्मदत्त की हत्या कर दी, जिसके परिणामस्वरूप स्वतः ही अंग पर अधिकार हो गया. 6. प्रशासन, सेना तथा न्याय को सशक्त बनाया.
9.	प्रधान रानी	मद्र की राजकुमारी 'खेमा'
10.	विवाह एवं दहेज	1. कोशल की राजकुमारी कोशल देवी से (दहेज में एक काशिग्राम मिला था, जिससे 1 लाख रु. का वार्षिक राजस्व प्राप्त होता था.) 2. लिच्छवि राजकुमारी चेलना से
11.	प्रशासनिक पदाधिकारी	1. सभासत्तक 2. सेनानायक 3. वोहारिक (न्यायाधीश)
12.	न्याय व्यवस्था	1. अपराधियों को कठोर सजा का प्रावधान था. 2. मृत्यु दण्ड, अंग-भंग एवं शारीरिक यातना का प्रावधान था.
13.	ग्रामीण प्रशासन	1. ग्राम का मुखिया 'ग्रामभोजक' होता था. 2. ग्रामभोजक गाँवों में शांति व्यवस्था स्थापित करते थे. 3. लगान वसूली का कार्य ग्राम भोजक का ही था. 4. ग्रामीण प्रशासन पर केन्द्र का नियन्त्रण था.
14.	राज्य में शहरों की संख्या	80,000 शहर थे (महावग्ग के अनुसार).
15.	अन्तिम समय	1. विम्विसार का अन्तिम समय अत्यधिक दु:खद रहा. 2. विम्विसार के पुत्र कुणिक अजातशत्रु ने अपने पिता को गिरफ्तार कर हत्या कर राज्यारोहण स्वीकार किया.

अजातशत्रु (492-462 ई. पू.)

1.	वास्तविक नाम	कुणिक अजातशत्रु
2.	पिता का नाम	विम्विसार
3.	पिता से सम्बन्ध	असन्तोषजनक
4.	उसके काल में राजवंश की स्थिति	हर्यंक वंश का चरमोत्कर्ष काल (प्रो. राय चौधरी के अनुसार)[1]
5.	साम्यता	यूरोप के प्रसिया पर्सिया राजवंश के फ्रेडरिक द्वितीय से[2]
6.	महत्वपूर्ण कार्य	1. राजगृह की किलेबंदी को सुदृढ़ किया एवं राजगृह में एक चहारदीवारी का निर्माण कराया. 2. गंगा और सोन के संगम पर पाटलिग्राम में एक दुर्ग का निर्माण कराया. 3. आंतरिक स्थिति सशक्त कर सैनिक अभियान प्रारम्भ किये.
7.	उल्लेखनीय कार्य	1. कोशल के साथ संघर्ष काशीग्राम के राजस्व रुक जाने के कारण किया, लेकिन वाद में दोनों में समझौता हो गया और कोशल नरेश प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वज्जीरा से अजातशत्रु का विवाह कर दिया.

---

1 Like Frederick II nd of Prussia he carried out the policy of a father with whom his relations were by no means cordial. His reign was the high watermark of the power of the Haryank dynasty

—H. C. RayChaudhary

2 Political History of India. Page—186

		2. मगध और वैशाली के मध्य लम्बे समय तक युद्ध चला. अजातशत्रु वैशाली के लिच्छवियों को परास्त कर वैशाली को मगध में मिला लिया था. युद्ध का कारण कीमती पत्थर, हार और हाथी के स्वामित्व को लेकर था. युद्ध 484-468 ई. पू. तक लगभग 16 वर्षों तक चला. मगध की विजय हुई.
		3. लिच्छवियों के पराजय से काशी, विदेह, मल्ल इत्यादि मगध में विलीन हो गये.
		4. अजातशत्रु के काल में मगध महाजनपद से साम्राज्य बन गया था.
8.	**अजातशत्रु की सेना के प्रमुख हथियार**	1. रथमूसल (गदायुक्त गाड़ी) 2. महासिला कण्टग (पत्थर फेंकने वाली मशीन)
9.	**मंत्री**	वस्सकार
10.	**अन्तिम समय**	462 ई. पू. में मृत्यु (अपने पुत्र द्वारा हत्या)

उदायिन् (462-440 ई. पू.)

1.	**वास्तविक नाम**	उदायिभद्र या उदायिन
2.	**राज्याभिषेक**	अपने पिता अजातशत्रु को मारकर 462 ई. पू. में
3.	**उल्लेखनीय कार्य**	1. मगध की राजधानी राजगृह से हटाकर पाटलिपुत्र में 457 ई. पू. में स्थानान्तरित. 2. अवन्ति और मगध के मध्य युद्ध हुआ परिणाम असन्तोषजनक रहा.

पुराणों के अनुसार नन्दिवर्धन और महानन्दी उदायिन के पश्चात मगध के सम्राट् बने, लेकिन जैन एवं बौद्ध साहित्य के अनुसार नागदासक, मुण्ड और अनुरुद्ध उदायिन् के उत्तराधिकारी थे. इन शासकों ने लगभग 32 वर्षों तक मगध पर शासन किया. इनके शासन में मगध में प्रगति अंशमात्र भी परिलक्षित नहीं हुई.

शिशुनाग वंश (412-344 ई. पू.)

शिशुनाग

- मगध में नये राजवंश के रूप में शिशुनाग वंश का प्रादुर्भाव हुआ.
- हर्यक वंश के दौरान शिशुनाग बनारस में मगध के राजा का गवर्नर था.
- बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार शिशुनाग ने 18 वर्षों तक एवं पुराणों के अनुसार 40 वर्षों तक शासन किया.
- शिशुनाग ने वैशाली को अपनी राजधानी बनाया था.

शिशुनाग ने अवन्ति के साथ युद्ध किया और उसे मगध साम्राज्य का अंग बना लिया. उस दौरान अवन्ति का राजा प्रद्योत था.

कालाशोक

बनारस और गया का पूर्व प्रशासक कालाशोक शिशुनाग वंश के प्रथम शासक शिशुनाग के उपरान्त मगध का शासक बना. इसके काल में मगध की राजधानी पाटलिपुत्र बनाई गयी थी. कालाशोक के दौरान बौद्धों की द्वितीय संगीति का आयोजन वैशाली में हुआ था. उसने 28 वर्षों तक शासन किया था. कालाशोक की हत्या कर दी गई जिससे शिशुनाग वंश में योग्य राजाओं का अभाव हो गया था.

'महाबोधिवंश' के अनुसार कालाशोक के निम्नलिखित दस पुत्र थे—मंगुर, सर्वज्ञजह, कोर्णदवर्ण, जालिक, संजय, कोर्व्य, पंचमक, नन्दिवर्धन, उभक, भद्रसेन.

कालाशोक की हत्या के बाद उनके दस बेटों ने शिशुनाग वंश के अन्त होने तक मगध साम्राज्य पर शासन किया. इसके उपरान्त शिशुनाग वंश का पतन हो गया.

शिशुनाग वंश का अन्तिम राजा नन्दिवर्धन या महानंदिन था.

नन्दवंश (344-323 ई. पू.)

महापद्मनन्द

शिशुनाग वंश के उपरान्त नन्दवंश का उद्भव हुआ जिसका संस्थापक उग्रसेन या महापद्मनन्द था. महापद्मनन्द को शूद्र या निम्न श्रेणी का माना जाता था. महापद्मनन्द श्रेष्ठ एवं शक्तिशाली शासक था. पुराणों में महापद्मनन्द को सर्वक्षत्रान्तक (सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला) एवं परशुराम का अवतार कहा जाता था. उसने एकराट् की उपाधि भी धारण की थी. कलिंग विजय के सम्बन्ध में खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में उल्लेख मिलता है. महापद्मनन्द के पास एक विशाल सेना थी, जिसके बल पर उसने पांचाल, काशी, अश्मक, इक्ष्वाकु, कुरु, शूरसेन इत्यादि क्षत्रिय कुलों को पराजित कर अपनी शक्ति को विस्तृत स्वरूप में फैलाया था. पंजाब से पूर्व का सारा भारत, मध्य प्रदेश, कलिंग, गोदावरी नदी, मालवा एवं महाराष्ट्र तथा मैसूर का क्षेत्र महापद्मनन्द के राज्य की सीमा में आता था. महापद्मनन्द ने मगध पर लगभग 28 वर्षों तक शासन किया था. महापद्मनन्द के बाद नन्दवंश पतन की ओर अग्रसर होता चला गया था.

महाबोधिवंश के अनुसार महापद्मनन्द के उत्तराधिकारी निम्नलिखित थे—

1. पंडुक, 2. पंडुगति, 3. भूतपाल, 4. राष्ट्रपाल, 5. गोविशानक, 6. कैवर्त, 7. दसिधक, 8. धनानन्द.

इन 8 उत्तराधिकारियों ने 12 वर्षों तक शासन किया था. नन्दवंश का अन्तिम शासक धनानन्द था, जो अत्यन्त अत्याचारी एवं दुष्ट था. यह सिकन्दर महान् का समकालीन था. इसके अत्याचारों से मुक्त करने के लिए चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध की जनता एवं कौटिल्य (चाणक्य) के सहयोग से नन्दवंश का पतन कर मौर्य साम्राज्य की नींव रखी थी. 322 ई. पू. में गुरु चाणक्य की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने धनानन्द की हत्या कर दी थी. धनानन्द का सेनापति भद्दशास था एवं शकटार और राक्षस उसके अमात्य थे. नन्दवंश के दौरान पाटलिपुत्र मगध की राजधानी थी. उनके समय में पाणिनी, कात्यायन, उपवर्ष, वर्ष, वरुचि जैसे महान् विद्वानों ने आश्रय प्राप्त किया एवं शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया. नन्दवंश ने सभी धर्मों को भी संरक्षण एवं आश्रय प्रदान किया था.

विदेशी आक्रमण
(The Foreign Invasions)

मगध साम्राज्यवाद के उदय के अलावा भारत में छठी शताब्दी ई. पू. से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. के मध्य घटित होने वाली घटना थी–विदेशी आक्रमण (The foreign Invasion). उस दौरान मगध साम्राज्यवाद का उदय पूर्व में हो रहा था, जबकि पश्चिमोत्तर प्रदेश में विदेशी आक्रमण का क्रम जारी था. विदेशी आक्रमणों से यद्यपि कोई विशेष राजनीतिक लाभ विदेशियों को नहीं हो पाया, क्योंकि वे भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने में नाकाम रहे.

पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण एवं राजनीतिक स्थिरता का अभाव, परस्पर वैमनस्य एवं शक्तिशाली शक्ति के अभाव के फलस्वरूप विदेशी आक्रमण का सामना करना पड़ा.

ईरानी आक्रमण (पारसी)

साइरस—पहला विदेशी आक्रमण भारत पर ईरान के हखामनी (पारसी साम्राज्य) ने किया, जिसका संस्थापक साइरस था. साइरस ने 558 ई. पू. से 530 ई. पू. के मध्य मकरान के रास्ते से भारत में प्रवेश किया. वैक्ट्रिया, सीस्तान, मकरान, कपिशा एवं हिन्दुकुश पर्वतमाला तक के क्षेत्रों पर उसका अधिकार हो गया. काबुल घाटी में उसे सफलता प्राप्त हुई. साइरस के इस सैनिक अभियान से हखामनी (पारसी) साम्राज्य की पूर्वी सीमा पश्चिमी सीमा से मिल गई थी.

डेरियस प्रथम—डेरियस या दारा प्रथम (522-486 ई. पू.) ने भारत पर पुनः आक्रमण किया. हमदान, नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख में डेरियस या दारा प्रथम की सिन्धु विजय का उल्लेख प्राप्त होता है. डेरियस प्रथम ने 519-513 ई. पू. के मध्य सिन्धु प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी. इसके अतिरिक्त पश्चिमी गांधार, कम्बोज एवं सिन्ध प्रदेश पर भी डेरियस प्रथम ने विजय प्राप्त की थी. भारत से ईरानी साम्राज्य को हर वर्ष '360' टेलेन्ट सोना प्राप्त होता था.[1]

क्षहर्याश या क्षयार्ष

क्षयार्ष या क्षहर्याश (486–465 ई. पू.) डेरियस या दारा प्रथम का उत्तराधिकारी था. उसने भारतीय राज्यों पर अपनी पकड़ जारी रखी. आक्रमण के दौरान इसने अनेक मंदिरों को तोड़ा एवं भारतीय देवताओं की पूजा को निषिद्ध किया. क्षयार्ष ने बलपूर्वक ईरान का प्रधान देवता अहुरमज्दा एवं ऋतम् (प्रकृति की पूजा) को आरम्भ किया.

भारत पर डेरियस या दारा तृतीय (335-350 ई. पू.) तक ईरानी आक्रमण का प्रभाव रहा. इसके उपरान्त सिकन्दर महान् (यूनानी शासक) ने दारा तृतीय पर आक्रमण कर भारत को ईरान के आक्रमण से मुक्त कर दिया.

ईरानी आक्रमण के परिणाम

ईरानी आक्रमण के 200 वर्षों में भारत की राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, कला एवं प्रशासनिक गतिविधियों में अत्यधिक अन्तर दृष्टिगोचर हुआ. भारत के पश्चिमोत्तर क्षेत्र में ईरानी सभ्यता-संस्कृति का स्वरूप परिलक्षित होने लगा था. ईरानी आक्रमण के संभावित परिणाम निम्नलिखित थे—

(1) ईरानी आक्रमण से सीमान्त प्रदेश की राजनीतिक दुर्दशा की पोल विदेशियों के समक्ष खुल गई. अप्रत्यक्ष रूप से यूनानी सम्राट् ने इस स्थिति से परिचित होकर भारत पर आक्रमण किया एवं विजयी रहा.[2]

(2) ईरानी आक्रमण से आर्थिक परिदृश्य प्रभावित हुआ. भारत और ईरान में व्यापारिक सम्बन्ध दृढ़ हो गये. भारत में चाँदी के सिक्कों का प्रचलन ईरानियों के आगमन से प्रारम्भ हुआ.

1. India Constituted the twentieth and the most populous strapy of the Persians empire and it paid a tribute proportionately larger than all the rest—360 talents of gold dust. —Herodotus

2. If the Achaemenian brought the Indian bowmen and lancers to Hellenic soil, they also showed the way of conquest to the peoples of Greece and Macedon. —Political History of Ancient India, Page 214, H. C. RayChaudhary

(3) ईरानी आक्रमण से ईरानी प्रशासनिक तत्वों की समाविष्टि भारतीय प्रशासन में हुई. मौर्य शासन में ईरानी प्रशासन तत्त्वों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है. अशोक की राजाज्ञाओं की प्रस्तावना एवं मेगस्थनीज की इण्डिका में यह विवरण उपलब्ध है.

(4) ईरानी आक्रमण से अरामाइक लिपि, खरोष्ठि लिपि का भारत में विकास हुआ. पवित्र अग्नि जलाने की प्रथा का आविर्भाव ईरानियों से ही भारतीयों ने सीखा.

(5) ईरानी आक्रमण से भारतीय कला को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला. अशोक की शिलालेख खुदवाने की कला, पत्थर को चिकना बनाने की कला, अशोक स्तम्भों के शीर्ष पर चित्रित घण्टानुमा आकृतियाँ ईरानी कला से ही प्रस्फुटित हुई. चन्द्रगुप्त मौर्य ने पाटलिपुत्र में अपना राजप्रासाद पर्सीपोलिस के राजमहल के ढाँचे पर तैयार किया था.

यूनानी आक्रमण
(The Greek Invasions)

ईरानियों के पश्चात् यूनानियों द्वारा भारत पर आक्रमण का सिलसिला प्रारम्भ हुआ. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्वकर्ता मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र सिकन्दर था, जो उस दौरान यूनान के मकदूनिया का सम्राट् था. सिकन्दर के पिता की इच्छा विश्वविजेता बनने की थी, लेकिन यह सम्भव नहीं हो पाया और इसको पूरा करने का जिम्मा सिकन्दर ने लिया. 336 ई. पू. में 20 वर्ष की उम्र में अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् सिकन्दर मकदूनिया का सम्राट् बना. एशिया माइनर, भूमध्यसागरीय प्रदेश, मिस्र, फिनिशिया, ईरान पर उसने विजय प्राप्त की. 330 ई. पू. गौगमेला या अरबेला के युद्ध में हखामनी साम्राज्य का सिकन्दर ने विनाश कर दिया. इसके बाद उसका मार्ग भारत विजय के लिए प्रशस्त हो गया. उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति दयनीय थी. चतुर्थ शताब्दी ई. पू. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर यूनानी साम्राज्य स्थापित किया.

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के विभिन्न राज्यों की दशा

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के विभिन्न राज्यों की राजनीतिक दशा अत्यन्त दयनीय थी. भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र का सम्पूर्ण क्षेत्र अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था. यूनानी इतिहासकारों के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के दौरान निम्नांकित राज्य थे—

(1) **अस्पेशियन** (Aspasian)—नामकरण ईरानी शब्द 'अस्प तथा संस्कृत शब्द अश्व' या अश्वक के आधार पर किया गया था. यह काबुल नदी के उत्तर के पहाड़ी भागों में अवस्थित था. इस राज्य का राजा युअस्पला था. अन्दक और ऐरिजियम इस राज्य के प्रमुख नगर थे.

(2) **गौर या गुरेअन्स** (Guraeans)—अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य गुरेअन्स या गौर अवस्थित था. इस परिक्षेत्र में पंचकौर, गौरी या गुरेअस नाम की नदी प्रवाहित होती थी.

(3) **अश्वक या अश्मक या अस्सकेनस** (Assakenos)—अश्वक या अश्मक सिन्धु नदी तक फैला हुआ था. मालकन्द दर्रे के पास में उत्तर की ओर 'मसग' नामक अश्मक की राजधानी थी. अस्सकेनोस यहाँ का राजा था, जो अत्यन्त प्रभावशाली एवं सैनिक शक्तिवाला शासक था.

(4) **आर्सकेस या उरसा** (Arasakes)—यह कम्बोज राज्य का भाग था एवं हाजरा जिले में अवस्थित था. आर्सकेस संस्कृत भाषा में उरसा कहलाता है. इसका खरोष्ठि अभिलेखों में कई बार प्रयोग हुआ है.

(5) **नीसा** (Nysa)—नीसा काबुल और सिन्धु नदियों के मध्य मेरोस पर्वत की तलहटी में था. यहाँ का शासन गणतन्त्रात्मक था. नीसा की स्थापना यूनानी उपनिवेशवादियों ने की थी. सिकन्दर के आक्रमण के समय नीसा का शासक आकूफिस था. यहाँ के निवासी डायोनिसस के साथ आयी हुई जातियों के वंशज थे.

(6) **तक्षशिला** (Takshshila)—तक्षशिला सिन्धु एवं झेलम नदियों के मध्य अवस्थित था. चतुर्थ शताब्दी ई. पू. में यह स्वतन्त्र राज्य बन चुका था. इससे पूर्व गांधार प्रदेश की राजधानी तक्षशिला थी. वर्तमान में यह स्थल रावलपिण्डी में आता है. तक्षशिला में वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली के प्रचलित होने के प्रमाण मिलते हैं. सिकन्दर के आक्रमण के समय टैक्साइल्स या बेसिलियस तक्षशिला का शासक था. बेसिलियस की मृत्यु के उपरान्त ओम्फिस या आम्भी यहाँ का शासक बना.

(7) **प्यूकेलाओटिस** (Peukelaotis)—प्यूकेलाओटिस राज्य काबुल से सिन्ध जाने वाली सड़क के पास वाले क्षेत्र में अवस्थित था, जो पाकिस्तान के वर्तमान पेशावर के अन्तर्गत आता था. इस राज्य की तुलना संस्कृत में पुष्करावती (पुष्कलावती) से की गई है. यहाँ का शासक आस्टेस था, जिसे हस्ती या अष्टक भी कहा जाता था. सिकन्दर के सेनापति हेफिस्तीन ने अष्टक की हत्या कर दी थी.

(8) **गान्दारिस** (Gandaris)—यह राज्य चिनाव और रावी के मध्य अवस्थित छोटा-सा राज्य था. इसके बारे में

अधिक उल्लेख प्राप्त नहीं होते तथापि यहाँ का शासक पुरु था, जो सम्भवतः ज्येष्ठ पुरु से किसी तरह से सम्बन्धित था. कुछ विद्वान् उसे ज्येष्ठ पुरु का भतीजा मानते थे.

(9) **अभिसार** (Abhisara)—अभिसार झेलम और चिनाव के मध्य अवस्थित था. ऐसा माना जाता है कि अभिसार प्राचीन कम्बोज का ही अंग था. यहाँ का शासक अवीसेर्यस था जो शक्तिशाली एवं कूटनीतिज्ञ था. तक्षशिला के उत्तरी पहाड़ियों के मध्य भाग को भी प्रसिद्ध विद्वान् स्ट्रेबो ने अभिसार कहा है.

(10) **आद्रेस्ताई** (Adraistai)—आद्रेस्ताई रावी नदी के तट पर बसा राज्य था. इसे महाभारत में आद्विज के रूप में वर्णित किया गया है. आद्रिस्ताई का प्रमुख शहर पिम्प्रमा था.

(11) **ज्येष्ठ पुरु (पोरस) का राज्य** (Kingdom of the Elder Porous)—वर्तमान गुजरात एवं शाहपुर में अवस्थित यह राज्य झेलम एवं चिनाव नदियों के मध्य अवस्थित था. यह अत्यधिक सम्पन्न, शक्तिशाली एवं सैनिकों से समृद्ध राज्य था. पोरस को वैदिककालीन आर्यों की शाखा के रूप में माना जाता रहा है. स्ट्रेबो एवं डायोडोरस यहाँ के सम्बन्ध में अनेक उल्लेख करते हैं.

(12) **सोफाइटस या सौभूति** (Sophytes)—सोफाइटस नामक एक सम्पन्न राज्य था, जो झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित था. यहाँ पर स्वतन्त्र राज्य होने के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते.

(13) **कठ या कथैओई** (Kathaioi)—यह राज्य चिनाव और झेलम नदियों के मध्य में अवस्थित था. इसकी राजधानी सागल (गुरुदासपुरा जिले के अन्तर्गत) थी. यहाँ पर सुन्दर पुरुष को राजा बनाया जाता था.

(14) **ग्लौगनिकाई प्रदेश** (Glauganikai)—ग्लौगनिकाई प्रदेश एक छोटा-सा राज्य था, जिसकी जनसंख्या 5 हजार थी. पुरु राज्य की सीमा से लगता हुआ, यह राज्य चिनाव नदी के पश्चिम में स्थित था.

(15) **पटलेन या पटल** (Patalene)—सिन्धु के डेल्टा में यह राज्य फैला हुआ था. इस क्षेत्र की राजधानी पाटल नगर थी. सिकन्दरकालीन मोरेस यहाँ का शासक था. यहाँ की शासन व्यवस्था स्पार्टा से मिलती हुई थी.

(16) **फेगल या फेगेलास** (Phegelas)—फेगेलस रावी और व्यास नदियों के मध्य बसा हुआ था. शासन-प्रणाली गणतन्त्रात्मक थी. फेगेलास का तत्कालीन शासक फेगेलास (भागल) था.

सिकन्दरकालीन अन्य राज्य

(17) **राज्य**—सिबोई (Siboi).

अवस्थित—झंग जिला का शेरकोट क्षेत्र.

वर्णन / विवरण—1. इनकी राजधानी शिविपुर या शिविनगर थी.

2. ऋग्वेद में वर्णित शिव जाति यहाँ के निवासियों की ही थी.

3. जातक कथाओं एवं अष्टाध्यायी में इसका उल्लेख हुआ है.

(18) **राज्य**—शाम्ब, सम्बस या सम्बोस (Sambos).

अवस्थित—मूषिक राज्य के समीपस्थ पहाड़ी स्थलों में.

वर्णन / विवरण—राजधानी सेहवान या सिंधिमान थी.

मूषिकों के साथ इनका सम्बन्ध अच्छा नहीं था.

(19) **राज्य**—आगलस्सोई (Agalassoi).

अवस्थित—ये शिवियों के पड़ोसी थे.

वर्णन / विवरण—1. इनके पास विशाल सेना थी.

2. सेना में 40 हजार पैदल एवं 3 हजार घुड़सवार सैनिक थे.

(20) **राज्य**—ऑक्सीकनोस या प्रोस्थस (Oxykanos)

अवस्थित—सिन्ध के पश्चिम में लरकान.

वर्णन / विवरण—यहाँ की प्रजा प्रास्ती या प्रोस्थस कहलाती थी.

(21) **राज्य**—मालव या मल्लोई (Malloi).

अवस्थित—रावी नदी के निचले भाग पर दाहिने तट पर अवस्थित.

वर्णन / विवरण—1. पाणिनी ने इन्हें 'शास्त्रीय जीवी' कहा है.

2. यह एक गणराज्य था जिसमें क्षुद्रक और मालवों का संघ था. क्षुद्रकों एवं मालवों का संयुक्त राज्य था.

3. चिनाव और सिन्धु नदी का संगम इसी स्थल पर है.

(22) **राज्य**—क्षुद्रक या आक्सीड्रकाई (Oxydrakai—Kshudrak).

अवस्थित—झेलम एवं चिनाव के पास अवस्थित.

वर्णन / विवरण—1. यह एक गणराज्य था.

2. वीरता के लिए प्रसिद्ध था.

3. शिवियों के पड़ोसी थे.

(23) **राज्य**—मौषिकनोष या मूषिक (Mousikanos).

अवस्थित—सिन्ध के विस्तृत क्षेत्र में अवस्थित.

राजधानी—सक्खर जिले का एलोर स्थल.

वर्णन / विवरण—1. यहाँ पर ब्राह्मणों की संख्या अत्यधिक थी, जो प्रभावशाली थे.

(24) **राज्य**—अम्बष्ट या आवष्टनोई (Abastanoi).

अवस्थित—मालव देश के नीचे एवं चेनाव-सिन्धु संगम के ऊपरी प्रदेश में अवस्थित था.

वर्णन / विवरण—1. सिकन्दर के काल में शासन-पद्धति गणतन्त्रात्मक थी.

2. यहाँ पर चारों वर्णों के लोग निवास करते थे.

(25) **राज्य**—मस्सनोई और सोद्रई (Sodrai Massanoi).

अवस्थित—उत्तरी सिंध, बहावलपुर एवं सिन्ध की सहायक नदियों के संगम के पास अवस्थित.

वर्णन / विवरण—यह राज्य सिन्ध नदी के दोनों ओर अवस्थित था.

(26) **राज्य**—ओसोडियोई (Ossadioi).

अवस्थित—चेनाव के तटवर्ती क्षेत्र में अवस्थित था.

वर्णन / विवरण—ओसोडियोई महाभारत में.

सिकन्दर का विजय अभियान

सिकन्दर का भारत अभियान लगभग 327 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ. हिन्दुकुश पर्वत श्रेणी से गुजरता हुआ सिकन्दर काबुल की उपत्यका में निकाइया या निकाई नगर (जलालाबाद के पास) तक पहुँच गया. सेना की एक टुकड़ी हफिस्तियन और पर्दिकस सिकन्दर के दो विश्वस्त सैनिक एवं सेनापतियों के नेतृत्व में पेशावर की तरफ बढ़ी एवं सिकन्दर के साथ दूसरी टुकड़ी तक्षशिला की ओर कूच पर निकली.

अश्वकों को परास्त करते हुए मस्सग से सिकन्दर नीसा पहुँचा. यूनानी देवता डायनोसिस के वंशज माने जाने वाले नीसा के निवासियों ने सिकन्दर के आक्रमण का विरोध नहीं किया. 326 ई. पू. में सिकन्दर सिन्धु नदी को पारकर तक्षशिला की तरफ बढ़ गया. उसके आते ही तक्षशिला एवं उर्सा के शासकों ने उसके समक्ष समर्पण कर दिया. अष्टकों को पराजित करता हुआ सिकन्दर पोरस को परास्त करने के लिए अग्रसर हुआ. इस दौरान उसकी सेना की दोनों टुकड़ियाँ आपस में मिल चुकी थीं. सीमान्त क्षेत्र में चौथी शताब्दी में

पोरुष उस समय का सर्वाधिक शक्तिशाली, स्वाभिमानी, राष्ट्रीय प्रेमी एवं वीर योद्धा था. पोरुष या पोरस झेलम नदी के तट पर सिकन्दर का अकेला ही रास्ता रोककर खड़ा हो गया. पोरस पर सिकन्दर के आक्रमण से उसे हार का सामना करना पड़ा था. इसके पश्चात् पोरस के व्यवहार से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने उससे मित्रता कर ली. पोरस की विजय के पश्चात् निकाइया (पोरस का युद्ध स्थल) और बूकेफल दो नगरों की सिकन्दर ने स्थापना की. बूकेफल में सिकन्दर के प्रिय घोड़े की मृत्यु हो गई थी.

इसके पश्चात् सिन्धु प्रदेश में सिकन्दर आगे बढ़ा. जहाँ पर उसको विद्रोहों का सामना करना पड़ा. छोटे पोरस को परास्त कर उसके क्षेत्र को बड़े पोरस को देकर सिकन्दर ग्लौगनिकाई प्रदेश की तरफ बढ़ा. उसके 37 नगरों को जीतकर ज्येष्ठ पुरु को वह प्रदेश सौंप दिया.

कठों को जीतता हुआ सिकन्दर फेगल और सौभूति शासकों को परास्त कर व्यास नदी तक पहुँच गया. इसके आगे बढ़ने के लिए सिकन्दर की सेना के इनकार कर देने के बाद वह वापस लौटने के लिए तैयार हो गया. सिकन्दर ने व्यास नदी के तट पर 12 वैदिका स्तम्भों का निर्माण यूनान देवताओं के नाम पर किया. सिकन्दर ने पूर्वी सीमा को अपनी विजय यात्रा को प्रदर्शित करने के लिए उसने यह सब किया. सिकन्दर ने जीते हुए प्रदेशों को अपने मित्रों में वर्गीकृत कर दिया. वर्गीकरण निम्न प्रकार से था—

1. झेलम और व्यास नदी का मध्य भाग—ज्येष्ठ पोरस को

2. सिन्धु और झेलम के मध्य का भाग—आम्भी को

3. कश्मीर और उर्सा क्षेत्र—अभिसार के राजा को

नवम्बर 326 ई. पू. सिकन्दर ने झेलम नदी के मार्ग से पुनः अपनी वापसी की यात्रा प्रारम्भ की. झेलम और चिनाव के संगम से स्थलमार्ग द्वारा सिकन्दर ने यात्रा की. वापसी यात्रा में क्षुद्रकों, शिवियों, मालवों, मूषिकों, अम्बष्टों एवं अन्य भारतीय सैनिकों से उसे कष्टकारी सामना करना पड़ा. सिकन्दर इन सबको परास्त कर पटल नगर में पहुँचा. एक सेना की टुकड़ी नियार्कस के नेतृत्व में समुद्री मार्ग से यूनान भेजी एवं दूसरी टुकड़ी क्रेटेरस के नेतृत्व में स्थलमार्ग से बोलनदर्रा से गुजर कर बेबीलोन तक पहुँची. सिकन्दर बेबीलोन में अस्वस्थ हो गया और वहीं उसका 323 ई. पू. में निधन हो गया.

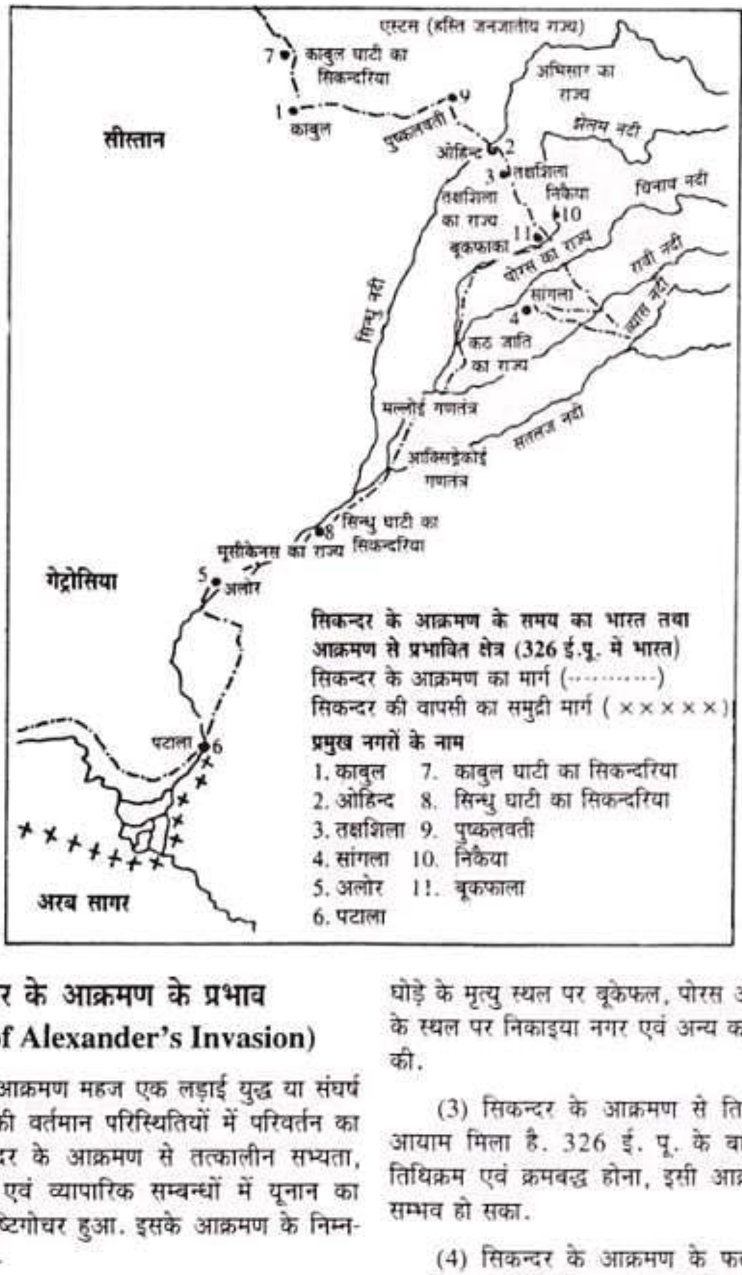

सिकन्दर के आक्रमण के प्रभाव (Effects of Alexander's Invasion)

सिकन्दर का आक्रमण महज एक लड़ाई युद्ध या संघर्ष से परे भी भारत की वर्तमान परिस्थितियों में परिवर्तन का कारक था. सिकन्दर के आक्रमण से तत्कालीन सभ्यता, संस्कृति, आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्धों में यूनान का समन्वित स्वरूप दृष्टिगोचर हुआ. इसके आक्रमण के निम्नलिखित प्रभाव थे—

(1) सिकन्दर के आक्रमण का सबसे प्रमुख कारण भारतीयों में राजनीतिक अस्थिरता था. इसके आक्रमण के पश्चात् भारतीयों ने सीमान्त प्रदेश की राजनीति में परिवर्तन कर उसमें एकता स्थापित की.

(2) सिकन्दर ने आक्रमण के दौरान कई यवन बस्तियों की स्थापना की. काबुल में सिकन्दरिया या अलेक्जेण्डरिया, घोड़े के मृत्यु स्थल पर बूकेफल, पोरस और सिकन्दर के युद्ध के स्थल पर निकाइया नगर एवं अन्य कई नगरों की स्थापना की.

(3) सिकन्दर के आक्रमण से तिथिक्रम को निश्चित आयाम मिला है. 326 ई. पू. के बाद का इतिहास का तिथिक्रम एवं क्रमबद्ध होना, इसी आक्रमण के फलस्वरूप सम्भव हो सका.

(4) सिकन्दर के आक्रमण के फलस्वरूप भारत और यूनानी सम्बन्धों में निकटता आई थी. भारत और यूनान के मध्य तीन जलमार्ग और एक स्थलमार्ग का खुलना इसी के फलस्वरूप हो पाया है.

(5) सिकन्दर के आक्रमण से भारत में सांस्कृतिक प्रभाव भी दृष्टिगोचर हुए हैं. सैन्यकला, साहित्य, कला, चिकित्सा, मुद्रा एवं ज्योतिष पर यूनानी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है.

विशिष्ट स्मरणीय परीक्षोपयोगी तथ्य

सोलह महाजनपदों का विशिष्ट विवरण

	नाम महाजनपद	राजधानी	टिप्पणी / विवरण
1.	अंग महाजनपद	चम्पा नगरी	श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
2.	मगध महाजनपद	गिरिव्रज एवं पाटलिपुत्र	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
3.	काशी महाजनपद	वाराणसी या बनारस	बारह योजन तक विस्तृत नगरी
4.	कोशल महाजनपद	श्रावस्ती (उ. कोशल) कुशावती (द. कोशल)	सरयू नदी का प्रवाह क्षेत्र
5.	वज्जि महाजनपद	वैशाली (लिच्छवी गण की राजधानी)	आठ गणतन्त्रों वाला श्रेष्ठ महाजनपद
6.	मल्ल महाजनपद	कुशीनारा एवं पावा	नौ गणतन्त्रों वाला महाजनपद
7.	वत्स महाजनपद	कौशाम्बी	प्रसिद्ध शासक उदयन का क्षेत्र
8.	चेदि महाजनपद	'शुक्तिमती' एवं सोत्थिमती	प्रतापी शासक शिशुपाल का क्षेत्र
9.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	तीन सौ संघों वाला महाजनपद
10.	पांचाल महाजनपद	अहिच्छत्र (उ. पांचाल), कांपिल्य (द. पांचाल)	द्रौपदी की जन्मभूमि
11.	मत्स्य महाजनपद	विराट नगर	चम्बल से सरस्वती तक फैली हुई
12.	शूरसेन महाजनपद	मथुरा	वृष्णि यादवों के संघ के अध्यक्ष भगवान् कृष्ण थे
13.	अवन्ति महाजनपद	उज्जैन (उ. अवन्ति) माहिष्मती (द. अवन्ति)	बौद्ध धर्म का केन्द्र
14.	गांधार महाजनपद	तक्षशिला	प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन
15.	कम्बोज महाजनपद	हाटक या राजपुर	राजतन्त्र से गणतन्त्र में परिवर्तित
16.	अश्मक महाजनपद	पोतना (पोतन)	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित

प्रमुख 10 गणराज्य

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. कुशीनारा के मल्ल
3. पावा के मल्ल
4. मिथिला के विदेह
5. पिप्पलीवन के मोरिय
6. रामग्राम के कोलिय
7. सुसुमार के भग्ग
8. अल्लकप्प के बुलि
9. वैशाली के लिच्छवि
10. केसपुत्त के कालाम

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के प्रमुख राज्य

	नाम राज्य	स्थिति	उल्लेख / वर्णन / टिप्पणी
1.	**अस्पेशियन**	काबुल नदी के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में	अन्दक और ऐरिजियम प्रवाह नगर
2.	**गूरेअन्स या गौर**	अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य	पंचकौर नदी का प्रवाह स्थल
3.	**अश्मक**	सिन्धु नदी तक प्रसारित	शक्तिशाली अस्सकेनोस शासक
4.	**उर्सा या आर्सकेस**	हाजरा जिले में अवस्थित	कम्बोज राज्य का भाग
5.	**नीसा**	काबुल और सिन्धु नदी के मध्य	यूनानी उपनिवेशवादियों द्वारा स्थापित
6.	**तक्षशिला**	सिन्धु एवं झेलम के मध्य में अवस्थित	वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली
7.	**प्यूकेलाओटिस**	काबुल से सिन्ध के मार्ग के पास	पुष्करावती (पुष्कलावती) के समकक्ष
8.	**गान्दारिस**	चिनाव और रावी के मध्य छोटा राज्य	शासक पुरु था
9.	**अभिसार**	झेलम और चिनाव के मध्य	अबीसेर्यस प्रसिद्ध शासक
10.	**आद्रेस्ताई**	रावी नदी के तट पर अवस्थित	पिम्प्रभा प्रमुख नगर
11.	**ज्येष्ठ पुरु का राज्य**	झेलम एवं चिनाव के मध्य अवस्थित	सिकन्दर का मित्र एवं शक्तिशाली शासक
12.	**सौभूति**	झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित	अत्यधिक सम्पन्न राज्य
13.	**कठ**	चिनाव और झेलम के मध्य अवस्थित	राजधानी सागल थी
14.	**ग्लौगनिकाई प्रदेश**	चिनाव राज्य के पश्चिम में	5 हजार की जनसंख्या का राज्य

विशिष्ट स्मरणीय परीक्षोपयोगी तथ्य

सोलह महाजनपदों का विशिष्ट विवरण

	नाम महाजनपद	राजधानी	टिप्पणी / विवरण
1.	अंग महाजनपद	चम्पा नगरी	श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
2.	मगध महाजनपद	गिरिव्रज एवं पाटलिपुत्र	महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
3.	काशी महाजनपद	वाराणसी या बनारस	बारह योजन तक विस्तृत नगरी
4.	कोशल महाजनपद	श्रावस्ती (उ. कोशल) कुशावती (द. कोशल)	सरयू नदी का प्रवाह क्षेत्र
5.	वज्जि महाजनपद	वैशाली (लिच्छवी गण की राजधानी)	आठ गणतन्त्रों वाला श्रेष्ठ महाजनपद
6.	मल्ल महाजनपद	कुशीनारा एवं पावा	नौ गणतन्त्रों वाला महाजनपद
7.	वत्स महाजनपद	कौशाम्बी	प्रसिद्ध शासक उदयन का क्षेत्र
8.	चेदि महाजनपद	'शुक्तिमती' एवं सोत्थिमती	प्रतापी शासक शिशुपाल का क्षेत्र
9.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	तीन सौ संघों वाला महाजनपद
10.	पांचाल महाजनपद	अहिच्छत्र (उ. पांचाल), कांपिल्य (द. पांचाल)	द्रोपदी की जन्मभूमि
11.	मत्स्य महाजनपद	विराट नगर	चम्बल से सरस्वती तक फैली हुई
12.	शूरसेन महाजनपद	मथुरा	वृष्णि यादवों के संघ के अध्यक्ष भगवान् कृष्ण थे
13.	अवन्ति महाजनपद	उज्जैन (उ. अवन्ति) माहिष्मती (द. अवन्ति)	बौद्ध धर्म का केन्द्र
14.	गांधार महाजनपद	तक्षशिला	प्रसिद्ध शासक पुष्करसारिन
15.	कम्बोज महाजनपद	हाटक या राजपुर	राजतन्त्र से गणतन्त्र में परिवर्तित
16.	अश्मक महाजनपद	पोतना (पोतन)	गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित

प्रमुख 10 गणराज्य

1. कपिलवस्तु के शाक्य
2. कुशीनारा के मल्ल
3. पावा के मल्ल
4. मिथिला के विदेह
5. पिप्पलीवन के मोरिय
6. रामग्राम के कोलिय
7. सुसुमार के भग्ग
8. अल्लकप्प के बुलि
9. वैशाली के लिच्छवि
10. केसपुत्त के कालाम

सिकन्दर के आक्रमणकाल में भारत के प्रमुख राज्य

	नाम राज्य	स्थिति	उल्लेख / वर्णन / टिप्पणी
1.	**अस्पेशियन**	काबुल नदी के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में	अन्दक और ऐरिजियम प्रवाह नगर
2.	**गूरेअन्स या गौर**	अस्पेशियन और अस्सकेनियन के मध्य	पंचकौर नदी का प्रवाह स्थल
3.	**अश्मक**	सिन्धु नदी तक प्रसारित	शक्तिशाली अस्सकेनोस शासक
4.	**उर्सा या आर्सकेस**	हाजरा जिले में अवस्थित	कम्बोज राज्य का भाग
5.	**नीसा**	काबुल और सिन्धु नदी के मध्य	यूनानी उपनिवेशवादियों द्वारा स्थापित
6.	**तक्षशिला**	सिन्धु एवं झेलम के मध्य में अवस्थित	वंशानुगत राजतन्त्रात्मक प्रणाली
7.	**प्यूकेलाओटिस**	काबुल से सिन्ध के मार्ग के पास	पुष्करावती (पुष्कलावती) के समकक्ष
8.	**गान्दारिस**	चिनाव और रावी के मध्य छोटा राज्य	शासक पुरु था
9.	**अभिसार**	झेलम और चिनाव के मध्य	अबीसेर्यस प्रसिद्ध शासक
10.	**आद्रेस्ताई**	रावी नदी के तट पर अवस्थित	पिम्प्रभा प्रमुख नगर
11.	**ज्येष्ठ पुरु का राज्य**	झेलम एवं चिनाव के मध्य अवस्थित	सिकन्दर का मित्र एवं शक्तिशाली शासक
12.	**सौभूति**	झेलम नदी के पूर्व में अवस्थित	अत्यधिक सम्पन्न राज्य
13.	**कठ**	चिनाव और झेलम के मध्य अवस्थित	राजधानी सागल थी
14.	**ग्लौगनिकाई प्रदेश**	चिनाव राज्य के पश्चिम में	5 हजार की जनसंख्या का राज्य

15.	पटल	सिन्धु के डेल्टा में फैला हुआ राज्य	स्पार्टा के समान शासन-प्रणाली
16.	फेगल	रावी और व्यास नदियों के मध्य अवस्थित	गणतन्त्रात्मक शासन-प्रणाली
17.	सिबोई	क्षंग जिला के शेरकोट क्षेत्र में	शिव जाति के निवासी
18.	शाम्ब	मूषिक राज्य के पहाड़ी स्थल में	राजधानी सिन्धिमान
19.	आगलस्सोई	शिवियों के पड़ोस में स्थित	विशाल सैनिक शक्ति वाला राज्य
20.	मालव	रावी नदी के निचले भाग पर दाहिने तट पर	क्षुद्रक और मालवों का संघ
21.	क्षुद्रक	झेलम एवं चिनाव के पास	वीरता के लिए प्रसिद्ध गणराज्य
22.	मूषिक	सिन्ध के विस्तृत क्षेत्र में अवस्थित	ब्राह्मण बाहुल्य क्षेत्र

1. अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सोलह महाजनपद

1. काशी
2. कोशल
3. अंग
4. मगध
5. वज्जि (वृज्जि)
6. मल्ल
7. चेदि (चेतिय)
8. वत्स (वंश)
9. कुरु
10. पांचाल
11. मत्स्य (मच्छ)
12. शूरसेन
13. अस्सक (अश्मक)
14. आवन्ति (अवन्ती)
15. गांधार
16. कम्बोज

2. भगवतीसूत्र में वर्णित सोलह महाजनपद

1. अंग
2. वंग
2. मगह (मगध)
4. मलय
5. मालवा
6. अच्छ
7. वच्छ (वत्स)
8. कोच्छ (कच्छ)
9. लाढ़ (लाट या राधा)
10. पाढ़ (पांड्य)
11. वज्जि
12. मोलि (मल्ल)
13. काशी
14. कोशल
15. अवाह
16. संभुत्तरा (संहोत्रा)

3. सोलह महाजनपदों की राजधानी एवं शासन-प्रणाली

क्र. सं.	नाम महाजनपद	राजधानी	शासन-प्रणाली
1.	अंग	चम्पा (भागलपुर के पास)	राजतंत्रात्मक
2.	मगध	प्रारम्भ में–गिरिव्रज (राजगृह या राजगीर) बाद में–पाटलिपुत्र	राजतंत्रात्मक
3.	काशी	वाराणसी (बनारस)	राजतंत्रात्मक
4.	वत्स	कोरुम या कौशाम्बी (इलाहाबाद, उ. प्र.)	राजतंत्रात्मक
5.	कोशल	उत्तरी कोशल की श्रावस्ती दक्षिण कोशल की कुशावती	राजतंत्रात्मक
6.	शूरसेन	मथुरा	राजतंत्रात्मक
7.	पांचाल	(i) उत्तरी पांचाल की अहिच्छत्रा (बरेली, उ. प्र.) (ii) दक्षिण पांचाल की कांपिल्य (फर्रुखाबाद, उ. प्र.)	राजतंत्रात्मक
8.	कुरु महाजनपद	इन्द्रप्रस्थ	प्रारम्भ में राजतंत्रात्मक कालान्तर में गणतंत्रात्मक
9.	मत्स्य महाजनपद	बैराठ या विराट नगर	राजतंत्रात्मक
10.	चेदि महाजनपद	सोत्थिवती या शक्तिमति	राजतंत्रात्मक
11.	अवन्ति (अवन्ती) महाजनपद	1. उत्तरी अवन्ति की उज्जैन या उज्जयिनी 2. दक्षिण अवन्ति की माहिष्मती	राजतंत्रात्मक
12.	गांधार	तक्षशिला	राजतंत्रात्मक
13.	कम्बोज	हाटक या राजपुर	प्रारम्भ में राजतंत्रीय व्यवस्था बाद में गणतंत्रीय व्यवस्था
14.	अस्सक या अश्मक	पोतन, पोतना या पोटली	राजतंत्रात्मक व्यवस्था
15.	वज्जि या वृज्जि	वैशाली	आठ गणराज्यों का समूह गणतंत्रात्मक शासन-प्रणाली
16.	मल्ल	1. कुशीनारा 2. पावा	गणतन्त्रात्मक

परीक्षोपयोगी स्मरणीय तथ्य

- छठी से चतुर्थ शताब्दी के मध्य की अवधि को भारतीय इतिहास में प्राक् मौर्य या बुद्ध युग के नाम से जाना जाता था.
- कुल या जाति के बसने के स्थान का नाम उसी जाति के नाम पर रखा जाता था, जो आगे चलकर प्रदेश या प्रान्त का नाम बन जाता था. इस तरह के राज्यों को 'जन' या जातीय राज्य कहते थे.
- कालान्तर में राजनैतिक परिस्थितियों के कारण जातियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर बस गयीं, जिन्हें 'जनपद' कहा जाने लगा.
- अगुंत्तरनिकाय में वर्णित महाजनपद विन्ध्य के उत्तर में अवस्थित था.
- पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने से **'पांचाल'** महाजनपद का निर्माण हुआ.
- अगुंत्तरनिकाय में वर्णित राजतन्त्रात्मक प्रणाली के महाजनपद निम्न थे—

  अंग, मगध, काशी, कौशल, वत्स, चेदि, कुरु, पांचाल, मत्स्य, शूरसेन, अवन्ति, गांधार, कम्बोज एवं अश्मक.
- अंग महाजनपद की सीमा मगध से लगी हुई थी. सम्प्रभुता के लिए मगध और अंग के बीच संघर्ष छिड़ा, जिसके परिणामस्वरूप मगध की राजधानी राजगीर पर अंग का अधिकार हो गया.
- गंगा नदी के दक्षिणी भाग में अवस्थित मगध महाजनपद की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज थी. इस महाजनपद की नयी राजधानी पाटलिपुत्र थी.
- वरुणा एवं अस्सी नदियों के संगम पर अवस्थित काशी महाजनपद की राजधानी वाराणसी या बनारस थी. वाराणसी छठी ई. पू. मिट्टी की दीवारों से घिरी एक नगरी थी.
- सम्प्रभुता के लिए काशी और कौशल में संघर्ष हुआ. अजातशत्रु ने काशी पर अधिकार कर काशी महाजनपद को मगध में सम्मिलित कर लिया.
- पूर्वी उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में अवस्थित कौशल महाजनपद के उत्तरी कौशल की आरम्भिक राजधानी श्रावस्ती व नयी राजधानी साकेत थी. दक्षिणी कौशल की राजधानी कुशावती थी.
- वज्जि महाजनपद मगध के उत्तरी भाग में अवस्थित था. यह बौद्ध का प्रमुख धर्म केन्द्र था गौतम बुद्ध ने प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली को यहीं उपदेश दिया था. इस महाजनपद को सम्राट् अजातशत्रु ने मगध साम्राज्य में मिला लिया था.
- वज्जि महाजनपद के पश्चिमोत्तर एवं कौशल महाजनपद के पूर्व में हिमालय की तराई में मल्ल महाजनपद की राजधानी कुशीनारा थी. यह बुद्ध के महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में विख्यात है.
- काशी महाजनपद के दक्षिण-पश्चिम में अवस्थित वत्स महाजनपद की राजधानी कौशाम्बी थी. नाटककार भास की नाट्य रचना 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उद्यन' इसी महाजनपद का शासक था.
- वत्स के दक्षिण भाग में यमुना नदी के किनारे अवस्थित चेदि महाजनपद की राजधानी शुक्तिमती या सोत्थिमती थी. शिशुपाल यहाँ का प्रसिद्ध शासक था.
- कुरु महाजनपद यमुना नदी के किनारे पर इन्द्रप्रस्थ और हस्तिनापुर के आसपास अवस्थित था. इस महाजनपद की राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी.
- पांचाल महाजनपद रुहेलखण्ड एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश मध्य दोआब क्षेत्र में अवस्थित था. उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिच्छत्र एवं दक्षिण पांचाल की राजधानी कांपिल्य थी.
- मत्स्य महाजनपद चम्बल से सरस्वती नदी तक फैला हुआ था. इसकी राजधानी विराट (वर्तमान बैराठ) थी. यहाँ के शासक विराट के नाम पर इसका नामकरण हुआ.
- शूरसेन महाजन पद चेदि महाजनपद के पश्चिमोत्तर में एवं कुरु के दक्षिण में अवस्थित था. इसकी राजधानी मथुरा थी. अवन्ति पुत्र (बुद्ध समकालीन) यहाँ का शासक था.
- पश्चिमी भारत मध्य प्रदेश के मालवा प्रदेश में अवस्थित अवन्ति महाजनपद दो विभागों (1. उत्तरी अवन्ति, 2. दक्षिणी अवन्ति) में विभाजित था. उत्तरी अवन्ति की राजधानी उज्जैन एवं दक्षिणी अवन्ति की राजधानी माहिष्मति थी.
- गांधार महाजनपद भारत के उत्तर-पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र में अवस्थित था, जिसकी राजधानी तक्षशिला एवं शासक पुष्करसारन थे. छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यहाँ पर फारस (ईरान) का अधिकार हो गया था.
- कम्बोज महाजनपद भारत के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र का दूसरा भाग था. इसकी राजधानी हाटक या राजपुर थी. यहाँ के प्रसिद्ध शासक चन्द्रवर्मन व सुदक्षिण थे.
- गोदावरी नदी के तट पर अवस्थित अश्मक महाजनपद की राजधानी 'पोतन' या पोतना या पोटली थी. मूलक जनपद अश्मक का पड़ोसी क्षेत्र था. क्षत्रियों का यहाँ पर शासन था. अवन्ति के साथ सम्प्रभुता के संघर्ष के फलस्वरूप अवन्ति ने अश्मक पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया था.
- तत्कालीन भारत में ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार निम्नलिखित पाँच प्रकार के राज्य थे—

  1. साम्राज्य
  2. भोज्य
  3. स्वराज्य
  4. वैराज्य
  5. राज्य.
- मगध महाजनपद के कलिंग क्षेत्र में बंग वंश के शासक का राज्याभिषेक साम्राज्य के लिए होता था. ये सदैव अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रयासरत् रहते थे.

- दक्षिणी के सात्वतों (यादवों) का राज्य 'भोज्य' व शासक 'भोज' कहलाता था. शासकों की नियुक्ति एक निश्चित अवधि के लिए होती थी.
- उत्तरी क्षेत्र (हिमालय) के शासक 'विराट' व राज्य 'वैराज्य' कहलाता था. राजा निश्चित नहीं होते थे. प्रजा के प्रतिनिधि शासन संभालते थे.
- छठी शताब्दी ई. पू. से राजा को सलाह देने एवं सहायता के लिए 'परिषद्' संगठित हो गयी थी. प्राक् मौर्य युग में राजतन्त्रीय व्यवस्था का प्रमुख अंग 'परिषद्' थी. इन परिषदों में प्रधान पुरोहित एवं राजा के सलाहकारों को चुना जाता था.
- राजा द्वारा अपनी सहायता के लिए चुने गये प्रमुख अधिकारियों का वर्ग 'महापात्र' होता था, जिन्हें कुछ राज्यों में 'आयुक्त' भी कहा जाता था.
- ग्रामवासियों द्वारा ग्राम में प्रशासन व्यवस्था चलाने के लिए छठी शताब्दी ई. पू. ग्राम प्रशासन का प्रधान 'ग्रामणी', ग्रामिक या ग्राम भोजक होता था. इनका कार्य शान्ति व्यवस्था स्थापित करने से लेकर कर उगाहने की व्यवस्था करना था.
- राजतन्त्रीय व्यवस्था में भूमि कर (उपज का 1/6 भाग) एवं विभिन्न स्रोतों से प्राप्त चुँगी राज्य की आमदनी का स्रोत था. कर एकत्र करने व खजाने की देखभाल करने वाले अधिकारी को 'भाण्डागरिक' (शौल्किक) एवं 'भागदुध' कहा जाता था.
- कानून व्यवस्था वर्गव्यवस्था पर आधारित थी. निम्नवर्ग को अधिक एवं उच्चवर्ग को कम सजा देने का प्रावधान था. न्यायिक क्षेत्र का प्रधान राजा होता था.
- छठी शताब्दी ई. पू. गणतन्त्रीय व्यवस्था वाले महाजनपद भी थे, जिनका उल्लेख पालि साहित्य में प्राप्त होता है. 10 गणतन्त्रों की प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन भी पालि साहित्य में किया गया है. ये गणतन्त्र सिन्धु नदी के द्रोणी एवं हिमालय की तलहटी में विद्यमान था.
- शाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु जो वर्तमान में पिपरहवा, बस्ती जिला, उत्तर प्रदेश में अवस्थित है. शाक्यों की नगरी लुम्बिनी में ही गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था. कालान्तर में यह कौशल राजतन्त्र में विलय हो गया था.
- शाक्यों के पूर्व में कोलियों का राज्य था. यहाँ पर रोहिणी दोनों के मध्य विभाजक रेखा का काम करती थी. इस नदी के जल के बँटवारे को लेकर दोनों में संघर्ष होता रहता था.
- कोशल के पूर्व में एवं वज्जि के पश्चिम में मल्ल महाजनपद अवस्थित था. यहाँ की पावा शाखा में महावीर स्वामी एवं कुशीनारा शाखा में गौतम बुद्ध का निर्वाण स्थल था.
- गणराज्यीय प्रशासन में निर्वाचित राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था. गण के प्रमुख व्यक्ति 'राजा की उपाधि' धारण कर सकते थे.
- महाभारत एवं पुराणों के अनुसार मगध के सबसे प्राचीनतम् राजवंश का संस्थापक वसु का पुत्र बृहद्रथ था. वसु ने ही मगध की प्रारम्भिक राजधानी गिरिव्रज की स्थापना की थी. मगध का अन्तिम शासक रिपुंजय था.
- शिशुनागवंश के बाद नन्दवंश का उद्भव हुआ, जिसके संस्थापक महापद्मनन्द थे. पुराणों में इन्हें 'सर्वक्षत्रान्तक' एवं परशुराम का अवतार कहा जाता था.
- नन्दवंश का अन्तिम शासक धनानन्द अत्यन्त अत्याचारी एवं क्रूर था. चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के सहयोग से धनानन्द की हत्या कर दी और नन्दवंश का पतन कर मौर्य वंश की नींव रखी थी.
- भारत पर पहला विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी (पारसी साम्राज्य) ने साइरस के नेतृत्व में किया. साइरस के इस सैनिक अभियान से पारसी साम्राज्य की पूर्वी सीमा पश्चिमी सीमा से मिल गई.
- ईरान के डेरियस या दारा प्रथम (522-486 ई. पू.) ने भारत पर आक्रमण किया. हमदान, नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख में डेरियस या दारा प्रथम की सिन्धु-विजय का उल्लेख मिलता है.
- भारत पर इरानियों के आक्रमणों का प्रभाव डेरियस या दारा तृतीय (335-350 ई. पू.) तक रहा. इसके उपरान्त यूनानी शासक सिकन्दर महान् द्वारा दारा तृतीय पर आक्रमण कर भारत को ईरान के आक्रमण से मुक्त कर दिया था.
- ईरानियों के पश्चात् यूनानियों द्वारा भारत पर आक्रमण का सिलसिला प्रारम्भ हुआ. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्व मकदूनिया के शासक फिलिप के पुत्र सिकन्दर ने किया. उस समय भारत की राजनीतिक स्थिति कमजोर होने से चतुर्थ शताब्दी ई. पू. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कर यूनानी साम्राज्य स्थापित किया था.
- यूनानी इतिहासकारों के अनुसार सिकन्दर के आक्रमण के दौरान भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था.
- तक्षशिला सिन्धु एवं झेलम नदी के मध्य अवस्थित था. चतुर्थ शताब्दी में यह स्वतन्त्र राज्य बन चुका था. इससे पूर्व यह गांधार प्रदेश की राजधानी थी.
- व्यास नदी के तट पर सिकन्दर ने 12 वैदिका स्तम्भों का यूनानी देवताओं के नाम पर निर्माण कराया था.
- सिकन्दर ने जीते हुए राज्यों को अपने मित्रों में निम्नलिखित तरीके से बाँट दिए—
  1. झेलम और व्यास नदी का मध्य भाग—ज्येष्ठ पोरस को
  2. सिन्धु और झेलम के मध्य का भाग—आम्भी को
  3. कश्मीर और उर्सा क्षेत्र—अभिसार के राजा को
- सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण के दौरान काबुल में सिकन्दरिया या अलेक्जेण्डरिया, घोड़े की मृत्यु स्थल पर बूकेफल, पोरस और सिकन्दर के युद्ध स्थल पर निकाइयाँ नगर एवं अन्य कई नगरों की स्थापना की.
- नवम्बर, 326 ई. पू. सिकन्दर ने झेलम नदी मार्ग से पुनः वापसी यात्रा प्रारम्भ की. वापसी यात्रा में शिबियों, मालवों, मूषिकों, अम्बष्टों एवं अन्य भारतीय सैनिकों से सामना कर वहाँ भी जीत कायम कर ली थी.
- सिकन्दर की सेना की एक टुकड़ी निर्याकस के नेतृत्व में स्थलमार्ग से बोलन दर्रा से गुजरकर बेबीलोन तक पहुँची. बेबीलोन में सिकन्दर के अस्वस्थ हो जाने से 323 ई. पू. में उनका निधन हो गया.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पालि भाषा में रचित बौद्धग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में उल्लेख किये गये महाजनपदों की संख्या थी—
   (A) 15 (B) 13
   (C) 12 (D) 16
2. अंगुत्तरनिकाय में वर्णित सभी जनपद अवस्थित थे—
   (A) दक्षिणी भारत (B) उत्तरी भारत
   (C) पश्चिमी भारत (D) पूर्वी भारत
3. महाजनपदों का उदय एवं विकास हुआ था—
   (A) चौथी शताब्दी ई.पू. में
   (B) सातवीं शताब्दी में
   (C) छठी शताब्दी ई.पू. में
   (D) इनमें से कोई नहीं
4. पांचाल महाजनपद का निर्माण हुआ था—
   (A) पाँच जनों या पाँच जातियों के मिलने से
   (B) चार जनों के मिलने से
   (C) तीन जनों के मिलने से
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
5. पालि भाषा में रचित बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय में वर्णित गणतन्त्रात्मक महाजनपद थे—
   (A) वज्जि एवं मल्ल (B) अंग एवं मगध
   (C) काशी (D) कौशल
6. अंग महाजनपद की राजधानी थी—
   (A) चम्पानगरी (B) वाराणसी
   (C) पाटलिपुत्र (D) साकेत
7. अंग महाजनपद का अन्तिम शासक था—
   (A) अजातशत्रु (B) सिकन्दर
   (C) बिम्बिसार (D) शिशुनाग
8. अंग महाजनपद का पड़ोसी महाजनपद था—
   (A) कौशल (B) मगध
   (C) वज्जि (D) पांचाल
9. अंग महाजनपद के शासक ब्रह्मदत्त की हत्या किस महाजनपद के शासक ने की ?
   (A) वज्जि (B) शूरसेन
   (C) मगध (D) चेदि
10. भौगोलिक स्थिति की दृष्टि से मगध महाजनपद अवस्थित था—
    (A) गंगा के दक्षिण भाग में
    (B) बिहार के उत्तरी-पूर्वी भाग में
    (C) वज्जि महाजनपद के पश्चिमी भाग में
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
11. वज्जि महाजनपद में गणतन्त्रों की संख्या थी—
    (A) सात (B) पाँच
    (C) चार (D) आठ
12. बुद्ध का महापरिनिर्वाण किस महाजनपद की राजधानी में हुआ—
    (A) मगध की राजधानी गिरिव्रज में
    (B) मल्ल की राजधानी कुशीनारा में
    (C) काशी की राजधानी वाराणसी में
    (D) उपर्युक्त से कोई नहीं
13. वत्स महाजनपद की राजधानी थी—
    (A) गिरिव्रज (B) कुशीनारा
    (C) कौशाम्बी (D) वाराणसी
14. नाटककार भास की नाट्य रचना 'स्वप्नवासवदत्ता' का मुख्य पात्र 'उद्‌यन' इस महाजनपद का शासक था—
    (A) मगध (B) वत्स
    (C) चेदि (D) मत्स्य
15. पालि ग्रन्थों के अनुसार चेदि महाजन की राजधानी थी—
    (A) शुक्तिमति (B) कुशीनारा
    (C) इन्द्रप्रस्थ (D) वाराणसी
16. महाभारत के अनुसार वत्स महाजनपद स्थापित किया गया था—
    (A) पौरव राजा निचक्षु द्वारा
    (B) चेदियों द्वारा
    (C) मगध के शासक द्वारा
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
17. चेदि महाजनपद के प्रतापी शासक थे—
    (A) सिकन्दर (B) शिशुपाल
    (C) उद्‌यन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

18. दिव्यावदान एवं जातक के अनुसार पांचाल महाजनपद के दो विभाग थे—
    (A) पूर्वी पांचाल एवं दक्षिणी पांचाल
    (B) उत्तरी पांचाल एवं दक्षिणी पांचाल
    (C) पूर्वी पांचाल एवं पश्चिमी पांचाल
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

19. पांचाल महाजनपद की उत्तरी पांचाल की राजधानी थी—
    (A) अहिच्छत्र (B) विराट नगर
    (C) कौशाम्बी (D) वाराणसी

20. मत्स्य महाजनपद का साहित्यिक स्रोत है—
    (A) महाभारत (B) रामायण
    (C) दिव्यावदान (D) जातक

21. अवन्ति महाजनपद के उत्तरी अवन्ति की राजधानी थी—
    (A) उज्जैन (B) तक्षशिला
    (C) मथुरा (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

22. अवन्ति पर मगध के इस सम्राट् ने आक्रमण कर विजय प्राप्त की—
    (A) पुष्करसारिन (B) चन्द्रवर्मन
    (C) इक्ष्वाकु (D) शिशुनाग

23. गांधार महाजनपद की राजधानी थी—
    (A) वाराणसी
    (B) कपिलवस्तु
    (C) तक्षशिला
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

24. मगध जनपद के शासक कहलाते थे—
    (A) भोज (B) स्वराट
    (C) विराट (D) सम्राट्

25. कर एकत्र करने वाले एवं खजाने की देखभाल करने वाले अधिकारी कहे जाते थे—
    (A) सेनापति (B) मन्त्री
    (C) भागदुध (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

26. पालि साहित्य में वर्णित गणतन्त्रों की संख्या थी—
    (A) आठ (B) दस
    (C) पाँच (D) तीन

27. निम्नलिखित जनपदों को उनकी राजधानी से सुमेलित कीजिए—
    (a) मगध (1) हाटक
    (b) कम्बोज (2) इन्द्रप्रस्थ
    (c) कुरु (3) गिरिव्रज
    (d) अंग (4) चम्पा

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	1	2	4
(C)	2	4	3	1
(D)	3	2	4	1

28. निम्नलिखित में से कपिलवस्तु राजधानी थी—
    (A) शाक्यों की (B) मगध की
    (C) अंग की (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

29. शाक्यों की इस नगरी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था—
    (A) कपिलवस्तु (B) लुम्बिनी
    (C) कोशल (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

30. कुशीनारा और पावा किस महाजनपद की दो शाखाएँ थीं ?
    (A) कोशल की (B) मगध की
    (C) मत्स्य की (D) अवन्ति की
    (E) मल्ल

31. बुद्ध के प्रारम्भिक गुरु आलार कलाम किस गणराज्य के रहने वाले थे ?
    (A) कालाम (B) मल्ल
    (C) भग्ग (D) विदेह

32. मगध साम्राज्य का उदय हुआ—
    (A) पाँचवीं शताब्दी ई. पू.
    (B) सातवीं शताब्दी ई. पू.
    (C) छठी शताब्दी ई. पू.
    (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

33. मौर्य साम्राज्य की स्थापना की—
    (A) समुन्द्रगुप्त मौर्य (B) स्कन्द गुप्त
    (C) चन्द्रगुप्त मौर्य (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

34. मगध के सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक था—
    (A) शिशुनाग (B) बिम्बिसार
    (C) वृहद्रथ (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

35. मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज की स्थापना की थी—
    (A) वसु (B) रिपुंजय
    (C) वृहद्रथ (D) शिशुनाग

36. ब्रहद्रथ वंश के किस शासक ने कृष्ण के निर्देशानुसार भीम से पराजित होकर मृत्यु का वरण किया ?
    (A) वृहद्रथ (B) जरासंध
    (C) वसु (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

37. नन्द वंश की स्थापना की थी—
(A) वृहद्रथ ने (B) जरासंध ने
(C) वसु ने (D) महापद्मनन्द ने

38. विम्बिसार का सम्बन्ध किस वंश से था ?
(A) हर्यक वंश (B) नन्दवंश
(C) वृहद्रथ वंश (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

39. निम्नलिखित शासकों के नाम से उनके पिता के नाम को सुमेलित कीजिए—
(a) उदयिन (1) विम्बिसार
(b) अजातशत्रु (2) वसु
(c) वृहद्रथ (3) अश्वसेन
(d) पार्श्वनाथ (4) अजातशत्रु

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	3	1	4
(B)	4	2	1	3
(C)	3	4	2	1
(D)	4	1	2	3

40. हर्यक वंश के दौरान बनारस में मगध के राजा का गवर्नर था—
(A) अजातशत्रु (B) विम्बिसार
(C) शिशुनाग (D) उग्रसेन

41. शिशुनाग वंश के प्रथम शासक शिशुनाग के बाद मगध का शासक था—
(A) उग्रसेन (B) घनानन्द
(C) कालाशोक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

42. शिशुनाग वंश का अन्तिम शासक था—
(A) नन्दिवर्धन (B) उग्रसेन
(C) भद्रसेन (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

43. नन्दवंश का संस्थापक था—
(A) पंडुक (B) संजय
(C) महापद्मनन्द (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

44. नन्दवंश के दौरान मगध की राजधानी थी—
(A) वाराणसी (B) पाटलिपुत्र
(C) कलिंग (D) गिरिव्रज

45. भारत पर पहला विदेशी आक्रमण किस ईरानी शासक ने किया था ?
(A) डेरियस
(B) डेरियस या दारा तृतीय
(C) साइरस
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

46. ईरान पर आक्रमण कर भारत को ईरानी आक्रमण से मुक्त कराने वाला यूनानी शासक था—
(A) पोरस (B) अशोक
(C) सिकन्दर (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

47. इस यूनानी शासक ने व्यास नदी के तट पर 12 वैदिका स्तम्भों का निर्माण कराया था—
(A) पोरस (B) आम्भी
(C) अभिसार (D) सिकन्दर

48. निम्नलिखित महाजनपदों को उनके विशिष्ट विवरण से सुमेलित कीजिए—
(a) अंग महाजनपद 1. महात्मा बुद्ध की गतिविधियों का केन्द्र
(b) पांचाल महाजनपद 2. श्रेष्ठतम व्यापारिक केन्द्र
(c) मगध महाजनपद 3. द्रोपदी की जन्मभूमि
(d) कुरु महाजनपद 4. तीन सौ संघों वाला महाजनपद

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	2	4	3	1
(B)	4	2	3	1
(C)	2	3	1	4
(D)	1	2	3	4

49. गांधार प्रदेश की राजधानी थी—
(A) नीसा (B) गान्दारिस
(C) तक्षशिला (D) अभिसार

50. यूनानी आक्रमणकारियों का नेतृत्वकर्ता था—
(A) सिकन्दर (B) पोरस
(C) चन्द्रगुप्त मौर्य (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

51. यहाँ पर सिकन्दर की मृत्यु हुई थी—
(A) बेबीलोन (B) कश्मीर
(C) फेगल (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)	5. (A)
6. (A)	7. (A)	8. (B)	9. (C)	10. (A)
11. (D)	12. (B)	13. (C)	14. (B)	15. (A)
16. (B)	17. (B)	18. (B)	19. (A)	20. (A)
21. (A)	22. (D)	23. (C)	24. (D)	25. (C)
26. (B)	27. (B)	28. (A)	29. (B)	30. (E)
31. (A)	32. (C)	33. (C)	34. (C)	35. (A)
36. (B)	37. (D)	38. (A)	39. (D)	40. (C)
41. (C)	42. (A)	43. (C)	44. (B)	45. (C)
46. (C)	47. (D)	48. (C)	49. (C)	50. (A)
51. (A)				

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

1. सूची-I (प्राचीन राज्य) को सूची-II (राजधानी) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची-I (प्राचीन राज्य)	सूची-II (राजधानी)
(a) अंग	1. चम्पा
(b) वत्स	2. कौशाम्बी
(c) मत्स्य	3. विराटनगर
(d) शूरसेन	4. मथुरा

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	2	3	4
(B)	3	4	1	2
(C)	1	4	3	2
(D)	3	2	1	4

2. **कथन (A)** : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के आरम्भिक वर्षों में यह निर्णय लिया गया था कि कांग्रेस का अधिवेशन देश के विभिन्न भागों में बारी-बारी से आयोजित किया जाएगा.

   कथन (R) : कांग्रेस का एकदम प्रारम्भिक नेतृत्व देश के विभिन्न भागों से सम्बन्धित सामाजिक सुधार का मुद्दा उठाना चाहता था.

3. निम्नलिखित में से किसने सर्वप्रथम पोटिन मुद्राओं को जारी किया ?

   (A) मौर्य शासकों ने (B) मगध शासकों ने

   (C) सातवाहन शासकों ने (D) चेदि शासकों ने

4. सूची–I (मौर्य प्रशासन में अधिकारी) को सूची–II (कर्तव्य) के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

   सूची-I (मौर्य प्रशासन में अधिकारी)

   (a) समाहर्ता (b) सन्निधाता

   (c) कर्मान्तक (d) व्यावहारिक

   सूची-II (कर्तव्य)

   1. उत्तराधिकारी
   2. महासंग्राहक (कलक्टर जनरल)
   3. मुख्य न्यायाधीश
   4. खानों का प्रमुख

   कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	1	2	3
(B)	2	3	4	1
(C)	4	3	2	1
(D)	2	1	4	3

निर्देश–(प्रश्न 5–7) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दिये गये कूट की सहायता से चुनिए–

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A का सही स्पष्टीकरण है.

(B) A और R दोनों सही हैं, परन्तु R, A का सही स्पष्टीकरण नहीं है.

(C) A सही है, परन्तु R गलत है.

(D) A गलत है, परन्तु R सही है.

5. **कथन (A)** : बौद्ध भिक्षुणियाँ भिक्षुओं के पर्यवेक्षण में रहती थीं.

   कथन (R) : भिक्षुणियों के लिए एक विशेष संहिता थी, जिसे भिक्कुनी पति मोक्ख कहते थे.

6. **कथन (A)** : जैन तीर्थंकरों की मूर्तियों की पूजा करते हैं.

   कथन (R) : वे परमसत्ता के अस्तित्व को अस्वीकार करते हैं.

7. **कथन (A)** : भागवत धर्म गुप्तकाल में लोकप्रिय हुआ.

   कथन (R) : गुप्तवंश के शासक कृष्ण के बहुत भक्त थे.

8. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चुनाव कीजिए–

सूची–I	सूची–II
(a) श्रमण	(1) दया और करुणा के लिए विख्यात
(b) उपासक	(2) आकाशावृत्त
(c) दिगम्बर	(3) अवैदिक संन्यासी
(d) बोधिसत्व	(4) गृहस्थ आराधक

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	1	2
(C)	3	4	2	1
(D)	4	3	2	1

9. दो जैन तीर्थंकरों के सिवाय परम्परा (Tradition) में उल्लिखित शेष सभी तीर्थंकर पौराणिक हैं. ये दो अपवाद हैं–

   (A) शान्तिनाथ और वर्धमान

   (B) पार्श्वनाथ और वर्धमान

   (C) शान्तिनाथ और आदिनाथ

   (D) पार्श्वनाथ और आदिनाथ

10. सूची I तथा सूची II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) आजीवक	(1) बन्धनों से मुक्ति
(b) अर्हन्त	(2) पार-पथ-निर्माता
(c) निर्ग्रन्थ	(3) धार्मिक लोगों का एक सम्प्रदाय
(d) तीर्थंकर	(4) योग्य अथवा विजेता

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	3	2	1	4
(B)	4	3	2	1
(C)	3	4	1	2
(D)	2	1	3	4

11. सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिये गये कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए–

सूची-I	सूची-II
(a) आचारांग सूत्त	(1) वैदिक
(b) अंगुत्तरनिकाय	(2) भागवत
(c) पांचरात्र संहिता	(3) जैन
(d) वाजसनेयी संहिता	(4) बौद्ध

कूट–

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	4	3	1	2
(B)	3	4	2	1
(C)	3	4	1	2
(D)	4	3	2	1

12. जिस राजा ने कलिंग में नहर खुदवाई, वह था–
    (A) हर्यक राजवंश का (B) शैशुनाग राजवंश का
    (C) नन्द राजवंश का (D) मौर्य राजवंश का

13. 'दूसरा नगरीकरण' इंगित करता है–
    (A) हड़प्पा नगरों का पुनरुज्जीवन
    (B) गंगा घाटी में नगरीय संस्कृति का उत्थान
    (C) दक्कन में नर्मदा घाटी में नगरों का जन्म
    (D) केरल में कोल्लम नामक नगर का पुनर्निर्माण

14. महाजनपदों ने उदय के कारण के रूप में सम्बन्धित नहीं है–
    (A) विदेशियों द्वारा विजित होने का भय
    (B) कृषि प्रसार
    (C) व्यापार तथा नगरीकरण का विकास
    (D) लोहे का विस्तृत प्रयोग

15. नीचे कुछ प्राचीन भारतीय राज्यों की सूची दी गई है–
    1. कोशल 2. वज्जि
    3. मगध 4. शाक्य
    इनमें से कौनसे राज्य प्रशासन की राजतन्त्रीय पद्धति का अनुसरण नहीं करते थे?
    (A) 1 व 2 (B) 2 व 4
    (C) 1 व 4 (D) 2 व 3

16. निम्न कथनों पर विचार कीजिए–
    मगध के एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उदय के प्रमुख कारण थे, इसकी / इसका–
    1. पाँच पहाड़ियों से घिरी हुई सामरिक महत्व की स्थिति.
    2. एक समृद्ध उर्वर क्षेत्र में स्थिति तथा अच्छा संसार तन्त्र.
    3. शासकों द्वारा अपनाई गई आक्रामक साम्राज्यिक नीति.
    4. महात्मा बुद्ध की गतिविधियों के साथ सम्बन्ध.
    इन कथनों में कौनसे सही हैं?
    (A) 1 व 2 (B) 1, 2 व 4
    (C) 1, 2 व 3 (D) 3 व 4

17. सूची-I (जनपद) को सूची-II (राजधानी) से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए–

सूची–I (जनपद)	सूची–II (राजधानी)
(a) कुरु	1. कौशाम्बी
(b) कौशल	2. राजगृह
(c) वत्स	3. अयोध्या
(d) मगध	4. इन्द्रप्रस्थ
	5. पाटलिपुत्र

कूट :

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	1	3	5	2
(B)	4	2	1	3
(C)	1	2	5	3
(D)	4	3	1	2

उत्तरमाला

1. (A)	2. (C)	3. (C)	4. (D)	5. (D)
6. (B)	7. (C)	8. (C)	9. (B)	10. (C)
11. (B)	12. (C)	13. (B)	14. (A)	15. (B)
16. (C)	17. (D)			